भारत सरकार **GOVERNMENT OF INDIA** राष्ट्रीय पुस्तकालम, कलकता । NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

वर्ण संख्या 180 · JC पुरक्षक संख्या 82 · 4

To go/ N. L. 38.

OF 18

180. Ja. 82. 4.

A

SYSTEM OF LOGIC;

WRITTEN IN SUNSCRIT BY

THE VENERABLE SAGE BOODH,

AND EXPLAINED IN A BURSCRIT COMMERTARY BY

THE VERY LEARNED VISWONATH TURKALUNCAR.

TRANSLATED INTO BENGALEE

BY

KASHEE NATH TURKOPUNCHANUN.



মহামহোপাধ্যায় শুবিৰনাথ তৰ্গাৰ্ছায়ক্ত ভগায়
ভাষাপায়িক্ষঃ !

প্ৰীকাৰীৰাৰ অৰ্থাকানন্ত ভগীলাৰ ৰাষ্টাৰা সংগ্ৰহ। १

श्रुष्टनाम शरार्थकोमूरी।

कूनरूक (भागारिकि बांडा करिकांचा विमन-तुष्रांचाय गुरूव होते । न



Calcutta:

PRINTED FOR THE CASCUTTA SCHOOL-BOOK SOCIETY,
AT THE BAPTIST MISSION PRESS, CIRCULAR ROAD,
1891.



College of Totherwin



चौर्गहरमचंद्रा सङ्ख्<u>र</u>

महर्षि (गाउमक्ड माप्तरनन।

শুনবিশ্বনাথ ভর্কানকার ক্ত তদায় ভাষাপরিহে।

আরিয়াদ্য গুমনিবাদি শুকিশীনাথ তর্কণঞানন কৃত, গৌড় দেশ পুচলিত নাৰুভাষা রচিত,নিদান মুকাৰণী সম্ভ, ডদীরার্ড নার্য গুড়ঃ

গুছ নাম পদার্থ কৌমুদী।

কলিকাজা নগরে মিসন মূলুয়াকে বালালা দ্বা ১২২৭ শালেই চৈত্র মাবে ২ জারিকে মূলুত হাইল ই

নেত্ৰ প্ৰাৰ পাদ পাণি, বিনঃ বেখে পুনে বানী, চলে বার করে পুন কান। পৃতি হিতি পর হেজু, সংগার সাগর সেতু, সেই বুজ তাবি অবিপান। বিবন বিবন আইল, বন্ধ হয়। মারাপালে, ভাতি অফকারে হয়। অবুন হারা হয়। পরিষ্ঠান, অনর নানিরা হার্থ, বাহাতে না আহে পুন গ্রম ট বুলুকর বুখোগনে, পুরু মুদ্ধ সর্ব আনে, নিম্মা বেখিকা বিরহিন। জীবে করিবারে জান, কাতর হইয়া খ্যান, করি জাত করণা বাগার ট মহার্থ গ্যোতম মুনি, পরমার্থ তত্ত্বানা, মুক্তির উপার উপবেশ। করিবেন বহুননে, বোক্ষা প্রার, সুক্তি হয় হয় বুলে লেব।

পুথাৰ, পুনের, দশ্বর, পুরোজন, বৃ্টার,গিছারা, ২বয়ন, তর্ক নিবর, বাব, জন্ধ, বিভগু, হেড্ডাস, হল, জাতি, নিগুহ, ছানানাণ, তব্জানারিঃশ্রেরণাং বিগম ইতি গোজিয় সূত্র- II

ুণুমাণ পুমের গণ, বাব কল্প পুরোজন, ব্টার সিভার ভর্ক হলা বিজ্ঞা আতি সম্পর, অবরব বিমিশ্য, হেডাঙাল বিগু-হেড় হলা। গোডার কবিভ সেই, আর্থ পরার্থ বই, কহিলার করিবা অরণ। নায়ে ভাষা পরিক্ষেব, শুবারি পরার্থ ভেলে, ভাল শান হয় একারণ ! পারম ইখনে ভাবি, কছে কাশীনাথ কবি, উপ-বাদ তর্ব পঞ্চানন ! ভাবা পরিছেব বিজু, উভারে পরমবজু, সাধু ভাষা কৃত সেতু গুণ!। বৃত্তি করি পূর্বাপার, মূল অর্থ পরস্তার, মূচাবে দন্দের হয় যদি ! ভাবিলে ভাবনা যাবে, অভকারে আলো হবে, বৃত্তি মাত্র পদার্থ কৌমুদী !। যদি হয় খোষজ্ঞান, করিয়া করুণা দান, শোধনক্ষরিবা পুত্ত বৃদ্ধি। বিনয় বচন বৃধা, ফ্পানু না করে কোধা, সুবর্ণের বিবর্ণ বিশুদ্ধি।!

পুদার যে করণ ভাছার নাম পুদাণ ৷ সেই পুদাণ চারি পুকার হয়, পুডাল, অনুমান, উপমান ও শবা । এহানে পুমা পৰে লথার্ছ चनुष्ठब चाउनव नाइराग्न कहरा चाउँवाछि इस ना। कहनानि পদের অর্থ পকাৎ কহিব ৷ এ স্থানে পুমের পদে পুমার বিষয় ভাবৰস্থ নহে কিছ পুষেয় পদ, পারিতাবিক ও পছজাদি শাম্ম ন্যায় যোগায়ম তথাচ মিখ্যা জ্ঞান জন্য বাসনা স্কুল বংশারের কারণ যে মিখ্যে জ্ঞান ভাহার দাপক যে জ্ঞান তাহার যে বিষয় ভাহার নাম পুমের? বেই পুমের, যদিশ পুকার হয়, আহা, পরীর, ইন্দ্রিয়, অর্ছ, বৃদ্ধি, মন।, পুরুদ্ধি, বোর, প্রেড্যভাব, কল, দু।থা, ও লপবর্গ। বহিরিন্দ্রিয় মাজের গ্রাহ্য যে প্রিবী, কল, তেজঃ, ৰাষু, ও আকাপ, এই পঞ্চদুবেরে বিশেষ গুণ তাহার নাম অর্থ ৷ तिहें कार्च, शक्ष शुक्कात इस, शक, सम, तम, सर्म ७ मच । या शुन्-ক্তির জনক হয় ভাহার নাম দোব ৷ বেই বোব, তিন পুকার হয়, রাল, বেব, ও মোহ 1 কথানতর মরণ, মরণানতর কল, ইহার নাম প্ৰেড্ডভাৰ ৷ ধৰ্মাধৰ্ম পুৰুত্তি জন্য যে অৰ্থ তাহার নাম ফল ৷ तिहे कन, बूहे नुकात हम, मूना ७ (गीत ! मूना कन, मून मृश्ताम উপ্ভোগ, বৌধ কল, পরীরাধি। ধুংগের অভ্যন্ত বিনাপের নাম আলুবর্ণ ৷ অংখর বিনাপ বিনা ডাছা বছর হর না ৷ অপ্রথেরিই নামান্তর মৃক্তি। ভব বৃত্তব্রাজির কথার নাম বাদ। বিভিগীযু काकित क्यांत नाम क्यां। यादात के सम् कतिया गुर्वि दस

অর্থাৎ পুর্বির কারণ যে ইচ্ছা ভাহার বিষয়ের নাম পুরোজন ই ৰাদিপুতিবাৰির যে স্থানে সাধ্যসাধনের কিব৷ নাধ্য নাধনা ভারের নিশ্চর হয় দেই হান, ব্টাভ হয়। দেই ব্টাভ, বুই পুকার হয় অহ্যা ও ব্যতিরেকা ৷ পর্ত পক্ষ, বহি সাধ্য, ধুম হেডু, ইড্যাবি হুলে মহানবাদি, অখ্যী দ্টাত, যে হেডু মহানলে বছি খুমের निकार क्या बद- जनायमानि, दाजिताको म्छोड, या रक्कू कनमान 'বহি বুমাভাবের নিশ্চর হয় ! শাক্রার্ধের যে নিশ্চর তাহার নাম বিভার। সেই বিভার, চারি পুকার হয়, সর্বজ্ঞ বিভার, পুরিজ্ঞ নিভার, অধিকরণ নিভার, ও অভুপোন নিভার ৷ বাদী ও পুরি-বাগী এই উভয়ের সমাত যে সিদ্ধান্ত তাহার নাম দর্ভজ দিদ্ধান্ত । ষেমন ইম্বরের জগৎ কর্ত্ব। বাদী ও পুতিবাদী ইহার একেরসম্মত যে সিদ্ধান্ত তাহার নাম পুতিতক্ত সিদ্ধান্ত 1 যেমন মীমাণসকের-দিগের শব্দে নিউ/ভূঃ যে অর্থের দিছি বিনা যে অর্থের দিছি হয় না তাহার নাম অধিকরণ সিদার ৷ যেমন প্রিয়ার অন্যত্ত সিদ্ধি বিনা ইবরে ভাতার কর্ত্ত দিছি হর না। সূত্রে নাক্ষাৎ অপান্ত যে বিষয় ভাছার ৰীকারের জাপক যে বিশেষ ধর্ম কথন ভাছার নাম অভ্ৰপান বিভাৱ। যেমন মনের ইণ্দ্রিয়ত্ব। তল্পভান রহিত অর্থাৎ অনিশ্চিত যে অর্থ ভাছাতে কারণের উপপাদন দারা তত্ত্ মিৰ্বাৰ্থ যে আপত্তি ভাষার নাম ভৰ্কঃ যেমন ধূম, য'দ বহিন্ন ব্যক্তি-টারী হরতেবে বহি ঋন্য না হউক,এবং পর্যত যদি নির্হাই হয় তবে নিৰ্ম হউক্ ইড্যাদি। ধুম, যদি বহির ব্যভিচারী হয় তবে বহিৰান্য না হউক্ এই ভর্কেতে ধুমে বহির ব্যভিচার পকার নিরাশ হয়, পশ্চাৎ ধুমেতে ৰাছির ব্যায়ি জান হয় পশ্চাৎ অনুমিতি হয় ৷ বক্তার ভাৰণবেরে অবিষয়ীভূত অর্থের কল্পনার দারা যে দোবাভিধান ভাহার নাম হল। যেমন এই লোক নেশাল দেশহইতে আগত ब एक् नरकश्नवक भरे खात्म नर मन्ध्री भरे पर्ध्वत कहानाह ষারা ইছার সবস্পাতে কয়ল কোঞায় এই দোষ কথনা শেই হুণ,

ক্রিক শুকার হয়, বাহ্ছল, নামাব্যহল ও উপচার হল অবিনে-বৈ কৰিত যে কৰ্ম ভাষ্যতে বজার অসভিপ্রেত বর্মের কল্পনার ছায়া বে লোবাভিয়ান ভাছার নাম বাক্ছল। ধেয়ন খেভাখয়ান-সান হইতেহে এই অভিপানে খেত খাবদান হইতেহে এই भुद्धांन कतिरम (वरु पून धावमान श्रहेरक भारत ना अहे खाव কথন ৷ দামানাধিকরণেঃ কবিত অর্থের অবক্ষোবক্ষেবে কর্ম কল্পনার যারা যে যোলাভিযান ভাহার নাম নামান্ড্রন। যোলক बारे बुद्धान विद्यान्त्रन नम्रह धारे कथा सहित्न धारे ब्राह्मि बुद्धान প্লাত্তে বিদ্যাদরণ সম্ভূতি নাখন করিতেছেন এই কল্লনার ছারা ব্যস্ত্ৰণ মাত্ৰে বিদ্যাচয়ণ সমুক্তি সাধন কয়া যায়বা যে ছেন্তু ব্যক্ত अंक्रिक वर्गकात इत वह नाव क्यम। अक वृत्तित बाहा नम পুরোগ করিলে অপরবৃত্তির ভারা যে পুতিবেখ ভাছার নাম উপ-ছার ছল। বেলৰ জন্ধ শক্ষেত্র পক্তির যারা আমি নিড্য এই পৰ প্রোগ করিলে এই পূরুষ অমূক হুইতে উৎপদ্ন অভএব ক্সি মূপে নিভঃ হয় এই পুকিংবর এক নীল পরের লক্ষণার দারা ब्रीम धरे अहे भव भुरहांश कहित्य यहे कि ब्रट्भ दीन इस इस এছ প্তিবেধ। পর্মত ধণ্ডনের নাম বিডঙা। কাভি, সম্পন্ন জাৱনুর, নির্বান্ত ছেত্রাক্তাস এই সকলের সক্ষণ ও উবাহরণ পশ্চাৎ शक्त हरेरव। याहारक शहाजह एक कारोज नाम निश्रहणान শেই বিগুহতান প্রতিজ্ঞানি, পুতিজারর, পুতিজ্ঞাবিরোধ, তেত্তর, আর্থান্তর, নির্থক, পুনরুজি, ও অর্থতাবন ইত্যাদি হারা পুকার क्य 1

i ¢] निर्यक्रे.

Make.	74	113	-र्वेकश	শম	13
नगर्वतः मः बंग	1	10	অসুনিতিয় লক্ষ্	4	1,4
বুবের বিভাগ	4	36	ধ্পবিভিত্ন সক্ষৰ	-01	13
ब्रान्ड विकार्ध	3.	54	नीरकृत्र सकन	-	3,8
बुरसम्बद्धाः	1	55	नवास्त्रह विकार्ज	OF	
अर्थात विकाध	•	10	नुख्याका कारन	10	38
ক্রেরি লক্ষ্	8.	3	নৌকিক পুৰ্যক্ষে ব্যাপার	**	54
कार्नारमञ्ज विकाध		35	অলৌকিক শুডাকের ন্যাপার 💵		9
কানাব্যের লক্ষ্	4		লামাণ্ড্য লক্ষ্য	13	55
विक्रमंत्र नेवारधीत निवर्णन	4	1	प्राप्त सफ्या	63	•
नवरात्र नेपोर्ट्यंत्र नेविष्टस		20	टार्श ाय	43	•
श्रवराष्ट्र नेशार्थक मधन	4	3,4			
क्षकाद नगार्थं इ वक्क अविका	tst 🕨	5	শ্রামর্শের জন্ধ	40	30
नह नगर्धात नार्की कथन	¥	1.8	वार्गडिक सम्ब	48	50
कोहर्यक सम्ब	5+	3,8	অনুষ্ঠিতির স্বর্গ ও ব্যালার	34	16
কার্থের বিভাগ	15	50	ল্যের্য ল্যা	44	
व्यानाधानिवित्र विश्वात्री	16	28	হাশিকের লক্ষ্য	44	16
শুদঃ সাইব্য কাশ	78	50	অল্যেক্স লাভৰ	44	1
रेवरेकी कथन	31	38	ব্যাপ্তের লক্ষৰ	44	33
মুত্যবিশেয়ের প্রবিশেষ কথ	T SE	19	শক্ষতার নিৰূপৰ	44	1.0
পৃথিবীয় নিষ্ণান	3,0	5	नगरमङ सक्त	60	2.2
जाराज्य शिक्योन	3.8	30	ছেবালাদের বিভাগ	èc	4
বেজের নিৰপ্ত	4,5	500			
ৰাতুর বিজপৰ	2,30	7	কামিবির করণ ও ব্যাণার	40	No.
क्यांकारनंत्र निवर्गनं	12	- 1			
কালের বিকশণ	-	- 4	चीक्रवरिंक कड़ब व वर्गनंड	45	56
शिक्त विकर्णन	S	3+	প্ৰিয় লম্বৰ	45	4.6
আআৰু বিৰূপৰ	οù	54	শক্তি আলের কারও	18,	55
युक्ति विकास	41	56	व्योतिकारिनावत विकास	16	•
नुवारतंत्र व्यक्तं	-01	24	नक्रवाह सन्दर्भ	10	50
-पूर्वत्या सम्।	41	1	. बाहणांत्र शक्य		

Jan.	44	11	পুৰুদ্ধ	পর	nig.
क्षांग ि	14	16	काशिकालह काइन	33.5	78
(को प्रीयम)	6-3	76	पर्व	558	N/K
क्षांकाचा	64		গুণাবিত লক্ষ্	354	10
कांध्यां	14		বৈশেষিক মতের পুরুষ	25.5	83
			राश्तिक गांतित सक्क	32.0	2,0
মধ্যের শিক্ষণথ	3-9	56	অর্থাপতির বিকাশ	NA	334
Geriricus from	le le	10	সুখের বিকশন	15.4	*
विरम्बद सन	33	9	मृत्रभव्र निवन्त	364	46
ministry de	35	36	हेर्न विकार	584	3
অব্যাল্যবৃত্তির সক্ষর	36	10	(क्लाइ तिक्रांत	180	33
ৰ্যাণ্য ুত্তি লক্ষ্	34		शास्त्र निकर्णन	200	•
কলের শিকশন	34	24	শুন্তির কারণ	5-54	
इरलाइ निकास	35	5+	বৈষ্টিয় জায়ৰ	202	4
धरकड़ शिक्लंब	34	13	जी रम त्यांनि वरवृत्र निकर	4 202	336
क्राचीर निवसंश	Ne	30	सकापत्र निकर्नन	186	*
জ-খ্যাস বিকাৰ	5==	•	দুবধের বিকাধ	306	10
चंत्रिकात्त्र निवर्णन	30%	9	(मुहरू निकन ⁴	200	4.0
मृधरकुड़ निकाब	3+5	38	সংক্রান্তের বিকাধ	308	1.8
क रापारशंक विकास	5 #3	13	অরবের ও পুরাতিজ্ঞানের	E .	
fauteig fautet	508	1	কৰৰ ও ব্যাপায়	202	3
শক্তৰ ও অশাসংক্র বিভাগ	501	30	वाहर्वज्ञ सक्त	508	le .
আংশর বিভাগ	33+	4	শুন্তাতি আংশক লক্ষ	308	b
অপুৰায় কৰে	334	10	গুলোইকের লক্ষ্য	242	25
বিশ্যের লক্ষ্য	555	100	অদ্থেদ বিকাগ	591	3.8
क-नंदग्र तथ्य	333	33	रेक्ट्र सम्बद	101	5.2
दिलागिरका समन	333	316	Rent's Terre	20×	-
चलुंद सक्त	505	40	অইকেন্দ্ৰ শিকশৰ	207	1.0
ভাগনিবলীয়ের লাক্র	300	11.	অবিধেনি পুনাৰ	38+	
का-कार्यहरू काहिन	22.0	50	कान्त्रक्षेत्र जन्मन	585	4
অপুলা ও পুমার কারব	228	>+	वस्थिक्तराज्य कांद्रव	382 -	9
PETER PETER	558	1	শক্ষের বিকাগানি	184	11

न्ऽाङ्ग सम्बन्धाः ভावा शक्रिहरू।

মুমুকুনোকেরদিগের পরম্মোকের কারণ পর্যালার তবুজান ভাল্র কারণ পর্মালার মনন সেই মনন পদার্থ পর্মাল্যতে ভাদ্ভর তাবৎ পারার্থের তেদের অনুমান সেই অনুমান ভাদ্শ ভাদ্ভর তাবৎ পারার্থ কারণ আন ব্যতিরেগার জান ব্যতিরেল হল না বে হেভ অভাবের জানে পুভিযোগির জান কারণ অভশ্য পারার্থিকিগা আবশ্যক এই হেল পুথ্মত। নৈরায়িক ও বৈশেছি-কের্দিগের বিচারস্থত ভাবৎ পারার্থ সামান্রংশ দ্পন ক্রাই-ভেচ্না

नवं गुवा खधा कमें सामानं समिष्टेचथ। समवाय खबाउभावः पदायाः सप्त कार्तिताः। पूर्यऽ• खणा खथा कर्षा मामानऽ• मदिरणवक•। सम्वास ख्या>ভावः शसार्थाः मक्ष कीर्विञः।

ৰুবং গুণ কৰা নামান গ্ৰিশেৰ নমৰায় ও অভাব এই নাভ পুতার পায়াও নামান গ্ৰুৱার পায়ার কৰে নামান গ্ৰুৱার বিধান বাহা কৰিছে বিধান বিধান কৰিছে বিধান কৰিছে বিধান কৰিছে বিধান কৰিছে বিধান কৰিছে কৰিছে কৰিছে কৰিছে কৰিছে কৰিছে কৰিছে কৰিছে বিধান বিধান কৰিছে বিধান বিধান কৰিছে বিধান ব

স্থাতি সম্ভ পৰাথেরি মহেঃ কোন্ পদার্থ কর পুকার হয় ভাহ। ক্লেমে কহিতেহেব !

> शिव्यव्यतिमें सम्बोधन बावदिगृषिनेशनः। त्रवाकश्य गुवास्यं रसेगान्धकातः गरं। सक्षेः संका परिसितिः एयक्तव ततःपरं। संवेगान विभागन्य यहत्तवः प्रयत्ननं । मुक्तिः सुतं दुःविनका वे वेग्निते गुक्तनं। व्यतिस्तिकारावश्रद्धं प्रकारक्तवः।

ক্ষিত্য হপ্তেক্সে মক্ষ্যেম কালদিখেছিনোমনঃ।
দুব্যাণ্য হথ গুণাকপণ রসোগন্ধতঃ পরণ।
স্পর্না সংখ্যা পরিমিতিঃ পৃথক্তক ততঃপরণ।
সংযোগত বিভাগত পরবৃক্ষাহ পরতৃক।
বৃক্ষিঃ সুখণ দুংখমিয়া ছেযোয়ত্বো গুক্তৃক।
দুবস্থণ বেছসংক্ষারাবহণ্টণ শাহ্ব এবচ।

পৃথিৱী কৰ ডেকং বারু আকাশ কাল বিক্ আত্মা ও মনং এই বন্ধ পুৰার পুরার পদার্থী এবং কল বল বাছ ক্লাৰ দুংগ ইন্ধা পরিমান প্রজ্ব লংকা বিভাগ পারত্ব অপারত্ব বৃদ্ধি দুখ দুংগ ইন্ধা বেব বন্ধ কল্প পুরত্ব বেব কল্প কল্প পুরত্ব বেব কল্প কল্প বিভাগ পারত্ব অধ্যা ও পাল্পার এই অন্যত্তর প্রভাৱ প্রপাদার্থী যে বন্ধ সমবার ও পাল্পার এই অন্যত্তর পশ্বের প্রপাদ্ধ হয় ভাল্যর নাম পুরা। কলীয় পারমাণ্ডে পার্যার্থীয় হয় ভাল্যর নাম পুরা। কলীয় পারমাণ্ডে পার্যার্থীয় প্রবিধারণার্থ সমবার্থীয় বিভাগ ব

লক্ষণের অধানৰ অব্যান্তি! অনজ্যে লক্ষণের গান্তর অভিব্যান্তি।
লক্ষ্যানজ্যে লক্ষণের আগন্তর অনান্তর। যাহার লক্ষণ করাবার
ভাহার নাম লক্ষ্য ভাতির অনক্ষ্যে। এথের লক্ষণ করাবার
ক্ষারিকেন ! পুত্যক বুব্বেঃ পুত্যক পুনাও অপুত্যক বুবেঃ অনুমার
পুনাও এবং পুত্যক গুণে পুত্যকগুমাও অপুত্যকগুণে অনুমার
পুনাও। অপরপুকাশকতেজঃ নামান্যাভাবের নাম অভকার এবং
ক্রিয়া নামান্যাভাবের নাম আগন্য অভএব অভকার বুব্যাতর অ
আলস্য গুণাত্তর নহে কিন্তু অভাবিপান্তর্থিই অন্তর্গত। এই রুগো
কোন্ পদার্থ কোন্ পদার্থের অন্তর্গত হয় ভাহা বিবেচনা করিবা।
নব বুব্রের ও চত্তরিগণতি গুণের লক্ষণানি পশ্চাৎ কহিবেল।

ক্ষেরি বিভাগ করিভেছেন।

उत्तीपणं तते। उवसीपसमानुवनन्त्राः । प्रसार्याच गमनं कर्मात्रेयोतानि वचन ॥ अमसं रेवनं सान्द्रनाकं ज्वतव मेनच । तिर्थामनमाद्रपादच ग्रामनादेव ग्रामी ॥

উৎক্ষেপণ- ততো হবক্ষেপণমাকুঞ্চনন্তপা ৷
পুসারণঞ্চ গমন- কর্মাণ্যেতানি পঞ্চ ৷৷
ভুমণ- রেচন- স্যান্যনার্জ্বলন মেবচ।
তিথ্যস্মনমহণ্যহত্ত্ব গমনাদেব গৃহ্যতে ৷৷

উৎক্ষোপ অবক্ষেপণ আ চ্ছান পুনারণ ও গামন এই পঞ্চ পুকার কর্মা উদ্ধে কেপ করা নাচে কেপ করা সক্ষ্মিত করা বিস্তারিত করা ও চরণের নিজেপানি এই সকল কর্ম হথা ক্রমে উৎক্ষেপন ধানি পরের কানিবা ৷ এবং ভূমণ রেচর সংগ্রম উর্কুশনর ও ভির্মা গ্রমন এই পাঁচ পুকার কর্ম প্রমানর অন্তর্গত হয় ৷ সংগ্রম পরে রুগের গাঁতি উর্কুশনর পরে ভেরের গতি ভূম্যগ্রামন পরে বক্ষ ক্ষিত্র । বের বিশিষ্ট খুবের সমবার সম্বন্ধে বর্তমান যে পথার্থ বিশেষ বিদ্যা পঞ্চমখন বৃত্তি ধুপনর পুতিযোগ্য যে পথার্থ তাহার মাম কর্মা। পূর্মক। অভিযাত বিস্থা নোগন হেম্বক কর্ম করে পশ্চাৎ বিভাগ পশ্চাৎ পূর্ব সপ্যোগ নাশ পশ্চাৎ উত্তর সংযোগ পশ্চাৎ কর্মনাশ হয় অভনব কর্মা পঞ্চমখন বৃত্তি ধুপনর পুতি-বোমি হয় পুত্রাক্ত কর্মে পুত্রাক্ত পুমান অপুত্রাক্ত কর্মে অনুমার পুমানঃ

नामारनात्र विचानां कतिराज्यस्य । स्रामान्धं विविधं प्रेरतं परचात्रपरमैनमः । जयादि चिकर्णाचनु सत्तापरतवेश्यते ॥ परभित्राचं या जातिः सैनात्रपरतवेश्यते । जयकादिक जातिन्तु परात्रपरतवेश्यते ॥ व्यापनकात् परात्रिसाकाय्यकाद्यस्यराद्याच ।

সামান্য- বিবিধ- প্রোক্ত- পর্কাহ্পর্মেবচ।
দুব্যাদি ত্রিকব্জিন্তু স্ভাপরতয়োচ্যতে॥
পর্জিন্নাচ বা জাতিঃ সৈবাহ্পরতয়োচ্যতে।
দুব্যক্তাদিক জাতিন্তু পরাহ্পরত্যোচ্যতে॥
ব্যাপকত্বাৎ পরাহ্পিস্যান্যাপ্যত্বাহ্হপরাহ্পিচ।

সামান্য দুই পুকার হয় পর ও অপর া দুব্য গুণ ও কছা এই তিনে বর্তমানা যে সভা দে পর সামান্য হয় বেহেলু কেবল দুব্যাদিবৃতি যে দুব্যভাবি জাতি তাহা অপেকা সভা ব্যাপিকা হয় দুব্য সং গুণ সং কর্ম সং এই সকল পুণীতি সভা কাতির পুমান দুয়া পর সামান্য ভেষা কে প্রিনীক্ষাধি জাতি তাহাঃ। অপর গমোরা হয় বেহেনু প্রিবীড়াহি জাতি সভা ও বুব জাদি জাতি

অপেকা ৰ্যাপ্ট হয়। বুৰুহাৰি আতি পইনামান্ট 🕸 অপির সামান্য হয় হেছেডু দুব্যস্থাদি ৰাতি পৃথিবী**স্থাহি ৰাতি অপেক্সা** ব্যাপিকা এব- সভাজাতি অপেক্ষা ব্যাপ্যা হয় ৷ যে অধিকত্বারে থাকে সেব্যাপক। যে ৰাজুড়ানে থাকে বেৰ্যাপ্য! নিজ্য ৰাখ্য লসবায় বছলে অনেক আশুরে বর্তমান 😝 পথার্থ ভাছার নাম দামান্য শামানেরে নামান্তর আভি । দ্ভগুলি ভিন ক্লাতি হয় সামান্তবাৰি চারি উপাধি হয় ৷ পৃথিবীত্বালি সকলেই ৰাতি কেবল আকালত্ব কালছ ও ছিজু এই ভিন উলা**ছি**! রপতারি ও উৎক্লেগধন্বারি সকলেই জাতিঃ দুর্যন্তারি সঞ্জ লাতি এ লক্ষণের সক্ষ্য যেহেছ গুব্যস্থাদি সকল জাতি নিভগ্ন এবং সমবায় সম্ভাৱে আনেক আপুরে বর্ত্তমানা হয় ৷ সামান্যভাবি উপাধি অশক্য যেহেত সামান্যজ্বাদি উপায়ি সমৰায় সমূত্ৰে বর্তমান হয় না। যে পথাথ যে সমুদ্রে বর্তমান হয় ভাছা পক্ষাৎ কহিব ৷ সমবার সমূদে অনেক আপুরে বর্তমান যে জন্য সংযো-গাদি ভাছাতে অভিব্যান্তি বারণার্থ নিভ্যপদ। নিভ্য এবং সমবার বয়নে এক আশুয়ে বর্তমান যে আকাশের পরিয়াণানি ভাছাতে অভিব্যাপ্তি বারণার্থ অনেক পদঃ নিত্য এবং অনেকজাপুরে বিশেবণতা সম্বন্ধ বস্তমান যে অন্তঃস্তাভাষাদি তাম্বাতে অতি-ব্যান্ডি বারণার্ধ সমবায় পদ ৷ এক মাত্র বৃত্তি তদ্যটন্তাদি লাভি নহে অতথ্য ভাষাতে অধ্যান্তির আশকা করিবা না। এ স্থানে নিভঃ শবে মৃশ্যের অপুডিযোগী কিয়া প্রাগভাবের অপুডিযোগী যেহেন্ত অন্তরের যারাই লংযোগাদির বারণ হয়! পুডাঞ্চ ৰাভিতে পুডাল পুষাণ অপুডাক ৰাভিতে অনুযান পুষাণ।

প্রমাণু সকলের পরন্ধরকেব বিশেষ প্যার্থ্যে নির্বাদ ক্ষিতেত্ব ঃ

सन्दीर निध्य नच्छति विशेषः गरिनीर्शिक्य स

षस्ड्रा ৰিভ্যদুৰ্যবৃত্তি ৰ্বিশেষঃ পরিকীর্তি ত: ॥

অন্তঃ কথচ সমধার সমূহে নিতঃগুব্ঃবৃদ্ধি যে পদার্থ তাহার ষাম বিশেষ। অন্তঃপৰে মহাপুদৰ পৰ্যান্ত স্থায়ী অৰ্থাৎনিতঃ। জনঃ স্তারপদার্থ সকলের জনধিকরণ কালের নাম মহাপুশর ৷ নিতঃপদে খুন্দ ও পুনাভাষের অপুভিযোগী অর্থাৎ উৎপত্তি বিবাস রহিত ৷ আনঃ পৰে উৎপত্তি বিশিষ্ট ৷ প্রমাণুতে সমবার সংগ্রেবর্ডমান ষে খ্যপুক ভাছাতে অভিব্যাপ্তি বারণার্থ অন্ত্যপদন অভাবত্যাদিতে **অভি**ৰ্যান্তি ৰাধুণাৰ্থ নিভুগুৰুঃবৃত্তি এই ভাগা জন্য শুৰুঃবৃত্তি তদ্য-**টন্দাদিতেঅভি**ৰ্যাপ্তি বারণার্ছমিত্যপ্র। নিত্যপুর্যবৃত্তিআকাশতা-দিকে অতিব্যক্তি বারণার্থ সমবায় সম্বন্ধ কথন। এবং যদ্যলি এই **লঞ্চনে আত্মন্ত জাতিতে ও আত্মশানির পরিমাণাদিতে অভিব**্যারি হর তথাপি লাতি ভিন্ত নিভঃ গুণ ভিন্ন এই দুই দলের যারা ৰারণ করিব।। ঘট পটাদি ভাবগদ্ধুর অবহুবের ভেদে পরপ্পর ভেদ্ জ্ঞান হর অবয়ব রহিত পরমাণু ধকবের পরস্লর তেদভানার্থ बिल्पेय लगार्थात बीकात। सारे विरलय अवार्ध व्यक्तितरिरक्षत পুডাক পুমাৰ বিশ্ব হয় যদি যোগারদিগোর **পরম**ণে পুডাকে পুমাৰ না থাকে তবে অপ্ৰামানিক হয় ৷

সমবায় পদার্থ দশন করাইডেছেন ৷

घटादीमां कपालादे। त्रचेषु गुलकमंत्रीः। तेषुत्राक्षेत्र सम्बद्धः समगदः प्रकीर्णितः॥

ঘটাদীনা• কপালাদৌ দুব্যেষু গুণকর্মণোঃ। তেষু জাতেশ্চ স**মদঃ সম**বায়, পুকীর্জিতঃ ॥

অবরবেক্তে অবংশির ধংবছে প্রণের ক্রিয়াবছে ক্রিয়ারশ্বিতঃ মুবেঃ বিশেষ পরংগ্রের এবং মুবঃ গুল ও কর্মা এই তিনেতে জাতির বেসমুক্ত সেই সমনার ৷ এ কেবল সমবায়ের পরিচয় মাজ ৷ বিতঃ

ক্ষাট বিশেষণতা সন্থয় ভিন্ন যে বৃত্তি নিয়াসক এক সমুদ্ধ ভাছায় নাম সমবার এই ভাছার শক্তণ। নংবোগ নহছে অভিব্যান্তি ৰারণার্থ নিডঃপদ ! বিশেষণতা সম্বন্ধে অভিব্যান্তি বারণার্থ বিশে-ৰণতা ভিত্ন এই ভাগ ! আকাশাৰি বৃত্তি আকাশাৰির ভাৰাজ্যে অভিব্যাপ্তি বারণার্থ বৃত্তি নিয়ামক এই বিশেষণ ? ভাগান্ত্য সন্থয় ৰুখি নিরামক নহে। পরয়ারাবছতে অভিব্যাপ্ত বারণার্থ এক পঞ্ দংবোগ দছতে ভ্তদানিতে ঘটানি থাকেঃ বিশেষণতী ভিন পুঞার হয় কালিক বিশেষণতা দিক্তৃত বিশেষণতা ও দৈশিক বিশেষ-नडा । कारन कानिक विरागवनडा नष्टक नकन वस थारक। निरंक দিক্কৃত বিশেষণতা নম্বন্ধ সকল বন্ধ খাকে। দৈশিক বিশেষণক্ষা দুই পুঞার অভাবীয় বিশেষণতা ও মরণ বিশেষণতা। অভাবীয় বিলেখণতা সমূত্রে অভাব থাকে । বরুপ বিলেখণতা সমূতে গুলানা-ৰিভে গগণতাদি থাকে**।** ভাষান্ত্য সমুক্ষে আপনি আপনাডে ৰাকে। পরমুরা বহুনে ঘটবাদি ভূতনাদিতে থাকে। এই কপাদে ছট আছে এই বাটে ঘটত্ব আছে এবং এই পুৰের এণ আছে ইন্ড্যানি পুজীতি সমবাজের পুমাণ! সমবায় সহৰু এক হইলেও ৰায়ুতে রপের অভাব পুঁযুক ভাহাতে রপবভা জান হয় না যে হেল বারুতে কেবল সমবায় থাকিলেও মুলীয় সমবায় নাই।

অভাব পদার্ভের বিভাগ করিতেছেন।

क्रभावस्य विश्वासंसमें क्रियेक्ट्राट्यस्य सेद्रमः । प्रामभाव स्वचा अस्तिक्ष्यस्य सामाव स्वच । सर्व विविद्य माध्यः संसमेत्रात्य स्वति ।

অভাবস্থ বিবা সংসর্গাহন্যোন্যাহভাব তেহতঃ। পুণিভাবস্তথা ধৃংসাহপ্যহত্যস্তাভাব এক। এবং বৈশিখ্য সাপসঃ সংসর্গাভাব ইম্যুতে।

কাৰ পদাৰ্থ ভিদ্ন যে পদাৰ্থ তাহার নাম অভাব দেই অভাব ৰুই পুকার দশ্দর্যাকার ও অনেগ্রন্যাকার। অনেগ্রন্যাকার ভিত্র ৰে অভাৰ দেই দাদৰ্ঘভাৰ দেই দাদৰ্ঘভাৰ ভিন পুৰায় পুগেছার মুগদ ও অভ্যন্তাভাব? পুরিযোগির কর হইলে বে অভাবের নাপ হর দেই পুগেভাব। জন্য যে অভাব দেই ধূণ্য নিড্য যে সম্পর্ণাভাব সেই অভ্যন্তাভাব। এই ক্সালে ঘট হইবে ইন্ডগ্রদি পুথীতি প্রাণ্নভাবের পুমান। এই কপালে ঘট নক হই-ब्राह्म रेकानि भुकोकि शुप्तनार भुषान । अरे क्व.न यहे नारे ইড্যালি পুতীতি অভ্যোভাবের পুমাণ। তাদায়; সরদ্বাবহিদ পুর্তিযোগিতাক অভাবের নাম অন্ম্যান্যাভার ৷ বট পট-ছাইতে ভিন্ন এবং ঘট পট নছে ইডানি পুনীতি অন্যোন্যা-স্থাবের পুমান। প্রাচীন মতে ঘটাদির অভ্যন্তাভাবের পুরিযোগী ভিন পুৰার ঘটাদি ঘটাদির মু'ল ও ঘটাদির প্রাগভাব। ঘটের অভ্যন্তাভাবের জ্ঞানের পুভি বেমন বট জান পুভিবনুক হয় ভেমন ষ্ট ধৃণ্দ ও ঘট পুারভাবও হয়। যদ্যপি যে অভাব যে অধিকরণে থাকে দে অকাব দেই অধিকরণের বরণ হয় এই রূপ কলুনাতে শাৰৰ পুযুক্ত অভিৱিক্ত অভাৰ পথাৰ্থের হীকারে পুনাণাভাষ কথাপি নামা অধিকরণের বরণ কল্পনা অপেকা অভিরিক্ত অভাব পদার্খের দ্বীকারে যে লাঘর লেই অভাব পদার্খের পুমান হর ৷

্ট্রানী॰ সকল পদার্থের সাধর্য্য ও বৈধর্য্য কহিছে আরম্ভ করিডেক্সে ।

सतागामध्य सामने चेयलादिन मुचते। जशानाज्ञक्ति जामर्ग्यः स्टाप्तकृत्यः।

জ্যেত্ব আদি বৰ্ষ বুৰঃ আদি লগু পূলাৰ্যের লাধৰাঁঃ হয় যে হৈছে। জ্যেত্ব আদি বৰ্ষ কেবলাব্য়ী। অভ্যন্তাভাবের অপুভিয়োগী অর্থাৎ নাৰ্ব ৰাষ্ট্ৰী যে পৰাৰ্থ ভাষাৰ নাম কেবলাৰ্কী! জেকছ পাঁচু জান বিষয়ত্ব। আদি পানু বাচ্যত্ব পুদেয়ত্ব অভিযেৱত্ব ও বন্ধুত্ব ইত্যাদা বাচ্যত্ব পান্ধে ইক্ষেত্ৰে ইক্ষার বিষয়ত্ব। পুদেয়ত্ব পান্ধে পুলা-বিষয়ত্ব। অভিযেৱত্ব পাৰে অভিযাবিষয়ত্ব। অভিযা পানু পক্তি।

> त्रयादयः एव भाषा कनेके समग्राधिकः । सत्तावना स्वय स्ताया गुकादिनिगुँ समिताः । १८५० काम स्वयंत्री कारतस्य सम्बद्धानिक

দুব্যাংয়ঃ পঞ্চ ভাবা অনেকে সম্বায়িনঃ। সতাবন্ত ভ্রয় স্ত্রাংগ গুণাদিনির্গুণক্রিয়ঃ।

লুব্য আদি পঞ্চ পুকারপদার্থ জনেক ও সমবারী হয় ভগাছ দুব্যালী পঞ্চ পদার্থের সংগর্জ্য জনেকত্ব ও সমবায়িত্ব। ফল্যপি আনার পদার্থেও অনেকত্ব আছে তথাপি ভারত্ব বিশিষ্ট আনেকত্ব নাই। সমবায়িত্ব পরে ক্রেন্ত্র নাই। সমবায়িত্ব পরে অভনব সামান্য আদি পদার্থে সমবায় বিশিক্ষত্ব না গাকিলেও ভাতি নাই। এবং লুব্য আদি ভিন পদার্থ সভার আলুয় গুপ আদি হয় পদার্থ গুণরহিত ও কর্মারহিত হয় তথাল দুব্যাদি ব্যয়ের সাংগ্রি সভাপুন্ত গুপাদিবট্টের সাংগ্রি গুণরহিতত্ব ও কর্মারহিতত্ব ।

सामाय परिचीनाच्यु सर्वे जाबादवेर मताः । पारिमाञ्चलभित्रानी कार्यनमुदादवं ।

সামান্য পরিহীনাতু সর্বে আত্যাদয়োমতাঃ : পারিমাওল্যভিদানা- কারণবৃমুদাস্ত- :

্লাসান্য আদি সারি পদার্থ দামান্যহিত হয় যে হেল সালা-ন্যাবি পদার্থে দামান্যাবি পদার্থ থাকে যা । এক পারিমার্ল্য ভিন্তে বঁতু বে কারণ ব্যু অর্থাৎ পারিমার্ল্য কার্যুক্ত কারণ হয় না ভবাদ না মান্যানি পদার্থ চ বাইবের নাগর্গ্য নামান্য হিছক।
নবং পারি মারণ্ড ভিন্ন পদার্থের নাগর্গ্য ভারণত্ব । পারি মারণ্ড
গরে পরমাণুর পরিমাণ। পরিমান পদার্থ আপনার আপুরে আরত্ব
যে সুর্ভ ভারার আপনার নজাতীর উৎকৃষ্ট পরিমান অভার
যেমন কপালের পরিমান কপালে আরত্ত ঘটের আপনার নজাতীর
উৎকৃষ্ট পরিমান কনার অনুত্ব ভ্রণ যে পরমাণুর পরিমান নে
কিছ ভেমন বঁহে ভারা ছইলে থেমন মহতে আরত্ত বন্ধর মহত্ত-রত্ব হয় ভৌনন পরমাণুহইতে
ও স্কুত্বভা হইতে পারে অভব্য হাপুকের পরিমান পরমাণুহইতে
ও স্কুত্বভা হইতে পারে অভব্য হাপুকের পরিমান পরমাণুর পরিমান জনত্ব নহে কিছু নংগ্রা আন্ত ইছা লক্ষাৎ করিবেন।
ভারণত্ব কি এই কিছ্যানাতে ভারার নির্মণ করিভেছেন।

खबधा सिविष्युचय नियता पूर्वनिता। बार्यतं भवेत्तयः चैतिषं परिकोतितं। समवाविद्यारचल मध्य चैयमध्यक्षमनाविद्येत्त्वं। इवं बायवयद्वेत्नृतोयमुकं निमित्त चेतुलं। यत्समनेनं वार्थं भवति चैयं तु समवाविद्यारचं तत्। सचासदं वितीयं जनक माध्यं परं सतीयं सात्।

অন্থা সিদ্ধিশ্ন্স্য নিম্নতা পূর্ববিত্তি।
কারণন্ত ভবেত্তম্য বৈবিধ্যা পরিকীতি তি ।
সমবায়িকারণন্তমহপ্তেয়মহপ্যহসমবায়িহেতৃত্ত।
এবং ন্যায়নয়কৈতৃতীয়মুক্ত নিমিত্ত হেতৃত্ব।
বং সমবেত-কার্য্যভবতিক্তেয়ত সমবায়িকারণ-তংগ্রন্থান্ত বিতীয় ক্ষান্ত্যান্ত।
ভবাসহ বিতীয় ক্ষান্ত্যালয় তৃতীয় স্যাত্য

অনাথাবিদ্ধি পুন্য অধ্য নিয়ত পূৰ্ববৰ্ণী যে পৰাৰ ভাছার

ফারণর হর অর্থাৎ অন্যোগিতি বরণাধোররহিত অবঁদ কার্ডের অব্যবহিত পূর্বালে কার্য্য নমানাধিকরণ অভারের অপুতিযোগী যে পদার্থ ভাছার নাম কারণ বস্তুতঃ যে পদার্থ বিদ্যুমানে ও অবিৰ্গমানে কাৰ্যের বিদ্যমানতা ও অবিদ্যমানতা হয় বেই পদার্ঘ কারণ হয় ৷ সূত্রাভাবে বস্তাভাব কপালকপানিকার দল্যাগাভাবে ঘটাভাব এবং পূণ্যভাবে সুৰাভাব ইভ্যাদি হয় অভএব সূত্র ৰূপাশৰণাশিকার সংযোগ ও পুন্য ইর্ডগুদি বন্তু ঘট ও পুৰ ইভাগির কারণ হয়। অন্যথা পিঞ্জির বারণার্থ পুথম দদঃ করাটি ঘটারি কার্যের পূর্বর্বা যে ত্থারি ভারার বারণার্থ নিয়ন্ত পদা কার্য্যের অব্যবহিত পূর্বভালে যে অবশ্য স্থায়ী হয় দেই কাৰ্য্য সমানাধিকরন অভাবের অপুডিযোগী হ্রাই অন্যথাসিত্তির নির্পণ পশ্চাৎ করিব ৷ কারণত্ব কারণের ধর্ম নেই কারণত্ব তিন পুকার হর নমবারিকারণত্ব অসমধ্যারি-काव्रश्य ଓ निक्रिय कांव्रश्य । य बहुत्क नमरवंध स्ट्रेरन का-র্ফ্রের কম্ম হয় সেই বস্তু শমবায়ি কারণ ডাহার ধর্ম সমবায়ি-কারণত। খ্পুকের পরমাণু বল্লের সূত্র এবং ঘটের কণাল ইত্যাদি ৷ সমবেত পরে সমবায় সহতে বর্তমান ৷ এবং সমবায়ি-কারণে আসম অর্থাৎ সমবায়িকারণের সম্মু বিশিষ্ট কে কারণ দেই অসমবায়িকারণ ভাতার ধর্ম অসমবায়িকারণত্বা শ্বপুকের পরমাধূলখযাগ বব্রের বুজ লখবাগ ফটের কণাল লংযোগ এবং ঘট পরিমানের কণাল পরিমাণ ইড়ােদিঃ এবং এই উত্তর কারণ তির যে কারণ নেই নিমিত্ত কারণ ভাহার ধর্ম নিমিত্ত কারণত্ব ৷ ঘটের খণ্ডাদি বক্তের তন্তাদি এবং খ্যুপুকের বীশ্বর ইত্যাবি।এইনে ইছা অবধান করিয়া কৃচিৎ দলবারিকারও বাংশী কাৰ্য্য নাপ হ'ব কৃচিৎ খনমবায়িকারণ নাপে কার্য্য রাখ হয় ৷ বেমন কণাপ নাগে ঘট নাগ এবং প্রমাণু সংখ্যে বাগে वर्ष्ट्र नाम रह ! अरे नप्रवाहि गुक्छि काइन जनप्राहन बाहन

লানিবা দীখন ইখনের জান ইক্ছা ও যতু এবং কাল দিক্ পুণিভাব ও আষ্ট এই অই প্ৰায় কারণ কার্য্য সকলের সাধানে কারণ হর। বাহার কারণত্ব কল্লবা ব্যতিকেতে ও অন্য পুকারে কার্য্য সিদ্ধি হয় ভাহার নাম অন্যবা বিদ্ধ তাহার ধর্ম অন্যথা সিদ্ধি। অন্যথা বিদ্ধ কত পুকার হর তাহা কহিতেহেন।

वेनसम् पूर्वभावः कार्यमादाय वा यदा।
भागमित पूर्वभावे माने यत् यूर्वभाव विमानं।
मन्त्रमाति पूर्वनितामग्रमरिमाय नयस एमने।
मन्त्रमाति पूर्वनितामग्रमरिमाय नयस एमने।
मन्त्रिमायस्य पूर्वभाविनः।
स्ते प्रचा ग्रम्थासिका दक्तनादिकमादिमं।
महादी दक्कमादि वितीयमग्रीय दक्षितं।
स्तीयम् भवे होम मुकास जनकेश्वरः।
प्रसीरासनादिः सदिने मान्यक्तान्त्री।।

যেনসহ পূর্বভাবে কারণমাদায় বা যস্য।
অন্য-পূতি পূর্বভাবে জ্ঞাতে বং. পূর্বভাব বিজ্ঞান•।
অনক-পূতি পূর্ববর্তিভামহপরিজ্ঞায় নয্স্য গৃহ্যতে।
অতিরিক্তমহথাহপিয়স্তবেধিয়তাবশ্যকপূর্বভাবিনঃ

এতে পঞ্চাহন্যথাসিত্ব। দণ্ডত্বাদিকমাদিন-। হটাদৌ দণ্ডকপাদি বিতীয়নহপি দশিত-। তৃতীয়ন্ত তবেছ্যোম কুলাল জনকোহপরঃ। পঞ্চায়াসবাদিঃ স্যাদেতে ব্যবশ্যকল্বহুসৌ।

কার্য্যের পূথি কাঃ পের যে রূপে নির্ভ পূর্যবিদ্যা অর্থাৎ ছে মর্ছ ভারণতার অব্যহনক হয় এবং করণের হার। বাহার পূতি কার্য্যের মিয়ত পূর্যবিদ্যা এবং কার্য্যান্তরের পূতি পূর্যবিদ্যা ভাগের অন- ৪র ঘাহার পুতি কার্য্যের পূর্বভিতা জ্ঞান হয় এক কারণের পুতি পূৰ্বভিতা কাৰ ব্যভিৱেকে যাহার পুতি ভাৰ্বের পূৰ্বভিতা কাৰ व। इस अव॰ III अहे स्वत्रथा निक्ष म्या**डे**सश्हेरक किन्न रच कार्स्रक्ष ঘবলা, নিয়ত পূর্বকী অর্থাৎ কার্যের পূর্বকালে কার্য্য সমানাধি-करन जलात्रत जनुष्टियांनी वह नीह वहादि वहन कार्यप्रट অন্যথা নিভ হয় যে হেৰ অবশ্য কুপ্ত নিয়তপূৰ্বৰ্ধি অনেয়া কায়-শত্ব সন্তব হউলে ইছারদিগের কারণত্ব কল্পন অকিঞ্চিও কর যেখন পুত্যক্ষে মহত্বের কারণত্বসম্ভব হাইলে অনেক শুব্যবড়ের কারণত্ব কল্পন অকিজিৎ কর'? এবং এই পঞ্চ অন্যথা বিজের মধ্যে ঘটাৰি মঞ্প কার্য্যে দশুমানি পুরাম অন্যর্থা নিছ যেহেন্ত বটানি কার্যেন্দ্র পূর্তি দণ্ডাদি কারণের দণ্ডত্বাদিরণে নিয়তপূর্গবর্তিতা এবংমঞ্চলাদি ষিভীয় অন্যথা সিভাযে হেন্ড ঘটাদি কার্য্যের পুতিদ**ও**রপাদির দণ্ডায়ে ৰ্রণ কারণের যারা নিয়ত পূর্বর্তিতা এবং আকাশ তৃতীয় অব্যথা বিত্ব যেহের ঘটাদি কার্য্যের পুতি আকাশের নিয়ত পূর্বভিত। জান কার্য্যাপ্তরের পুতি পূর্বজিতা জানের অনন্তর হয় যে ছের আ-কাশ শবের সমবায়িকারণ অতএব পুরুষতঃ শবের পুতি পূর্বভিতা কান হর পরে ঘটানির পুতি হয় এবং কৃষ্ণকারের গিড়া চর্ম্ম ঝন্যথা নিছ যেত্ত ঘটাৰি কার্যের পুতি ক্ষকারের শিতার নিয়ত পূর্ব-বর্তিতা জান পুরমত: কুছকার বরপ কারণের পুতি পূর্বর্তিতা জাব বিনা হয় না এবং রাববাদি পঞ্চন অন্প্রাসিত্ব যে হেও ঘটাবি কার্য্যের পুতি রানবাদি এই অন্যথা নিত্র চত্তইগৃহইতে ভিত্র হয় এবং এই সকল অন্ধাসিছের মধ্যে পঞ্ম অন্ধাসিছ আব্শ্যক হয় যে হেন্ত ভাহাডেই এই দারি পুকার অন্যথানিত চরিভার্থ হর যে হেৰ কুম্ব নিয়ত পূর্বর্তি দণ্ডাবিকারণেতে হবি ঘটাবি কার্কের সম্ভব হয় ভবে দওত্বাদির কারণত্ব কল্পনে প্রয়োজনাভাত ও গৌরব যে হেক্সফীনি জার্ফের পুভিন্থানি যে সহয়ে ভারও হয় ৰপ্তবাৰি তাহাহইতে একজন সমুদ্ৰ কারণ হয়। ভাগাপাঃ গছগো

খাষ্টের পুতি হও জন্য বে চজের ভুমণ ভজন্য যে কপান কপান নিজা ভাছার আপুরুত্ব সহবে হও কারণ এবং দওত্বের আপুর যে হও ডজ্বর্ড যে চজের ভুমণ ভজন্য যে কপান কণানিজা ভাছার আপুরুত্ব নহবে, হওড় কারণ এবং হওরগাহির কারণত্ব কল্পনে ও এই রপ গৌরব জানিবা।

> सम्भविष कार्यनं मचकीर विशेषं। मुख्यममें माथ होते चेय मध्यान्यक्षसम्बद्धि चेतुनं ।

সম্বায়ি কারণত্ব- দুব্টস্যেব বিজ্ঞেয়-। গুণকর্ম মাত্র বৃত্তি জ্ঞেয়ম্হপাহপ্যহসমবায়ি হেভুড়ু-।

সমবারিকারণত্ব কেবল দুব্য বৃত্তি হয় এবং অসমবায়িকারণত্ব ধ্রণ কর্ম মাত্র বৃত্তি হয় অধাচ সমবায়িকারণত্ব দুবেরর সামর্য্য এবং অসমবায়িকারণত্ব ধণকমের সামর্য্য !

নিত্য দুব্যহইতে ভিন্ন যে পদাৰ্থ ভাহার নামদাঁ আপুতিতু ।
নিত্য দুব্য কাহার ও আপুত হয় না কিছু আপুত হয় । এই
আপুত্র সমবারাদি সমুদ্ধে জানিবা অব্যথা নিত্য দুব্যেও ভালিকাদি সমৃদ্ধে কালাদির আপুত্র থাকে । পরমাধ্ আকাশ কাল
হিক্ ও আল্লা এই পদ্ধ দুব্য নিত্য । এবং প্রিব্যাদি নব দুব্যের
নাম্য্য দুব্য ও ধ্যাপুরত্য

चितियेथं प्रकारियः यक्त्रीतम् रक्तः। वदाध्यदत्तं मृतैतः विद्या वेतास्यः सनीः।

कि जिस्सा ज्यारज्यः भवतास्य वकः। भन्नार्भन्नः सूर्वदिकाः विभाष्ट्राः सनी।

পরত্ব অপরত্ব মূর্তত্ব ক্রিয়াপুরত্বও বেগাপুরত্ব এই পঞ্চ পৃথিৱী কল তেখা বারুও মন। এই পঞ্চ দুবেরর সাধর্ম্য হর? যে পদার্থের পরিমাণের নীমা হয় ভাহার নাম মূর্ত্ব। আকাশাবি ভাষ্ণ নহে যে হেত্ব আকাশাবির পরম মহতৃপরিমাণ।

ধারবানেবিয়া মন্মানন যথা নছন্।
ভিন্তাৰ মধ মুলানি খলাবি জয়নিবিছ।
কালখাত্মদিশা• সর্বগতত্ত্ব• পর্ম• মৃহত্।
কিত্যাদি পঞ্চ ভূতানি চন্থারি রূর্শবহিষ্টি ।

আকাশ কান্যিক্ও আত্মা এই চারি বুবেরর সাধর্ম্য নর্থান্তত্ব অর্জাৎ বিজ্তৃ এবং পরমন্ত্ব অর্জাৎ নর্গোৎক্ট পরিমানবত্ব। এবং পৃথিবী আদি পঞ্চনুব্য তৃত নামে ব্যাত হয় তথান পৃথিব্যাদি পঞ্চ বুবেরর সাধর্ম্য তৃত্ত্ব। সর্থান্তর নগমান বিশিক্ট যে পলার্ম তাহার নাম বিজু । আকাশাদি তাদ্শ হর । আত্ম তিম্ন অধ্য বিশেষ ধণের আশুর যে পলার্ম তাহারে নাম ভ্তু । জানাদি বরুপ বিশেষ ধণের আশুর যে আত্মা তাহারে নাম ভ্তু । জানাদি বরুপ বিশেষ ধণের আশুর যে আত্মা তাহারে অতিব্যান্ধি বারুপার্ম আত্ম তিম্ব এই ভাগ ধণাশুর যে কাশাদি তাহাতে অতিব্যান্ধি বারুণার্ম বিশেষ পদ । কাশাদিতে বিশেষ ধণ নাই । সজ্যেতে লক্ষ্যেরের তেনের অনুমান জন্মার যে তাহার নাম সক্ষণ সেই সক্ষণ কুই পুরুষ্য বিশ্ব আশাদ ও পারিভাষিক। লোমযুক্ত লাক্ষ্যম্ব পরার । বরুপ আগম ও পারিভাষিক। বা বিশিক্ষত্ব অথত একশাধাপনুষানি বিশিক্ষত্ব বৃক্ষ্য ইত্যানি সক্ষণ পথানির বরুপ আগমান । অ্তত্যানির সক্ষণ পারিভাষিক। এবংপ্রিবী আদি চারি মুখ্য মূর্ণ বিশিক্ষ ভবাচ প্রিব্যাধি মুখ্য চক্ষক্রির নাথবঁ। মূর্বংশুরস্থা

नवारस्थनुर्वेकादश्यानाककरोरिनां।
स्वापश्रीनः कविको विशेष गुन्नद्रवते।
मुद्राद्रसुष्ठजुर्व् महापर्वेशायामान्द्रीदिशाः।
सद्राक्ष्रपुर्वे स्वाप्तिका विस्थि सग्हेरहरू।

পৃথিবী আনি চারি নুবের মুবেরর আরম্ভ হয় তথাচ পৃথিবরাদি চল
পৃথিবর সামর্ল্য নুবরারম্ভকু ! এবং আনালা ও আবারে যে বিশেষ
প্রণ যে অব্যাপর বৃল্ভি ও ক্ষণিক হয় তথাচ আকাল ও আবার
নাংধর্ল্য অব্যাপর বৃল্ভি বিশেষ প্রণের আগুরুত্ব এবং ক্ষণিক বিশেষ
প্রথের আশুরুত্বা যাহার একমেশাবক্ষেদে উৎপত্তি অব্যাদাবক্ষেদ্র
দে অভাব নেই অব্যাপর বৃল্ভি হর এবং যাহার উঠায় ক্ষণে ধৃশ
হয় নেই ক্ষণিক হয়। আকাশ ও আখার বিশেষ প্রণ যে পরু ও
আনাদি তাহারা এতাদ্শ হয় যে হেল্ড আকাশে পরের কোন
দেশাবক্ষেদে উৎপত্তি কোন দেশাবক্ষেদে অভাব ও পুরমক্ষণে
উৎপত্তি বিতায় ক্ষণে বিতি তৃতীয় ক্ষণে বিনাশ দেখিতেছি এবং
আঝারে ও জানাদির শরীরাসক্ষে উৎপত্তি ঘটাবক্ষেদে আভাব
ও পুরম ক্ষণে উৎপত্তি বিতায় ক্ষণে হিভি তৃতীয় ক্ষণে বিনাশ
দেশিক্ষেদি ! পৃথিবরাশির বিশেষ প্রণ ব্যাপর বৃত্তি ও বস্কাল
ভারী অক্ষর তাহাতে অতিব্যাপ্তির আশ্রুণ করিবা না !

रूपंत्रकतः प्रवासः वेशिक्षात् प्रथमितकः। तुक्को वे रसकतः वरीवै मित्तिकेश्वरः।

কশবুৰত্ব পুত্যক যোগিষ্যাৎ পুথমত্ৰিক।
পুকণী ৰে রসবতী ৰয়েটিনসিক্তিকোদুবঃ।

পৃথিবী আদি ভিন সুত্য ক্লণ বিশিষ্ট দুবস্থ বিশিষ্ট ও পুঞ্চ-ক্ষের বিবয় এবং পৃথিবী আদি দুই দুব্য এক ও রদবিশিষ্ট ইয়া এবং পৃথিবী ও তেজের যে দুবজু নে নৈমিছিক হয় তথাচ পৃথি-বসদি দুব্যক্রের নাথর্ছ্য রপবজু নুবজ্বত্ব ও পুত্যক্ষ বিষয়ক্ এবং পৃথিব্যাদি দুব্যক্রের নাথর্ছ্য গুক্তব্ব ও প্রত্যক্ষ বিষয়ক্ এবং তেজের সংগ্রন্থ নৈমিজিত দুবজুঃ

আজানি পুরবর্গান্ত বিশ্বযুদ্ধনিয়েল। নবুর শন্ত লংখনের বিধনন নিক্তনান্ত। আহ্বানো ভূতবর্গান্ত বিশেবর গুরুগারিন: । বদুক্ত বস্তু সাধর্ম্যত বৈধ্যানিভরস্যতে ।

আগা ও প্থিবচাদি পঞ্চত বিশেষ এণের আপুর ওখাচ আগার ও প্থিবচাদি পঞ্চত্তের সাধর্মট বিশেষওগাসুষ্তু। এবং জেরতাদি বিনা যে যাহার সাধর্মট উক্ত হইরাহে সে আনেট্র বৈধর্মট হর জের্জাদি কাহার ও বৈধর্মট হয় না যে হেন্ত জেব-সাধ্রী হয়।

বায়ুর নৰ ৪৭ তেজের একাদশ ৪৭ ইত্যানি পুাচীন কারিকার অনুসারে পৃথিবী আধির ক্রম পরিভ্যাগ করিয়া বায়ু আধির ক্রমে কোন্ বুবেরে ক্রভ পুকার ৪৭ ভাষা কহিতেছেন।

सर्थे (देशे हिताक संस्थित का देश है ते गुरुष्ट । सर्थे स्वर्धे हिताब गुरुष्ट प्रवस्त । सर्थे दसस्य विदेशिति क्या मे स्वर्थे । स्वर्थे दसस्य विदेशिति क्या के स्वर्थे । विवसीना मध्युताः स्वित्यति चतुर्थे । मुख्यादियन्त्रं स्वर्धित सम्बद्धं भावना तथा । सम्बे (असीर्थे गुजार्थे का सनः शुक्र वृद्धे । संवादियन्त्रं स्वर्धितः सम्बद्धे ने के के भ श्रंकादमःपचवुजिदिकायतेः=धिवेशरे ! धरात्मरलं श्रंकावाःमध वैजन जानसे !

শার্দানেরাহানীবেগাধ্যম-কারোমকতোগুণাঃ ।
আই শার্দানেরাক্স- দুবোবেগণা ডেজনি।
শার্দানেরাহানীবেগণা গুরুত্বক দুবত্বক।
কাপ- রসত্তথা সেকোবারিলেতে চতুর্দশ।
বুজানি বই- স-খ্যাদি পঞ্চক- ভাবনা তথা।
ধর্মান্ধর্মোগুণা এতে আত্মন: সুগ্রুত্বদশ।
স-খ্যাদিপঞ্চক- কাল বিশোঃ শব্দা তেচ খে।
স-খ্যাদয়ঃ পঞ্চ বুজিরিছায়ভোহ্পিচেন্থরে।
পরাহ্পরত্ব- স-খ্যাদ্যঃ পঞ্চ বেগশা মানসে।

ল্লৰ্ল সংখ্যা পরিয়াৰ পৃথকু সংযোগ বিভাগ পরত্ব জ্ঞপরত্ব ৪ বেল এই নর এব বালুর। এবং ল্লপ সংখ্যা পরিয়ান পৃথকু নগলোল বিভাগপরত্ব জ্ঞপরত্ব রূপ দুবস্থ ও বেল এই এক্সাদশ এব তেজের। এবং ল্লপ সংখ্যা পরিয়ান পৃথকু সংযোগ বিভাগ পরত্ব জ্ঞানত্ব বেল গ্রহত দুবস্তু রূপ রূপ ও ব্রুহ এই চন্তর্মশ আ জলের। এবংল্লপ সংখ্যা পরিয়ান পৃথকু সংযোগ বিভাগ পরত্ব জ্ঞানত্ব বেল গ্রহত্ব দুবস্তু রূপ রূপ ও গ্রন্থ এই চন্তর্মশ এব পৃথিবীর। জ্ঞালা দুই পুরার নীবালা ও পর্যালা। লীবালা বন্ধন ও মোচ-ক্রে ঘোল্য এবং পৃতিব্যক্তি তেবে ভিন্ন পর্যালা ইপর হরেন তেই বনুর ফোচন রহিত এবং অধিত্রি। তাহার মধ্যে বৃদ্ধি শুধ নুধাইক্যা লেব যতুস্থ্যা পরিয়াণ পৃথকু সংযোগ বিভাগভাবন। বর্ষ ও অবর্ষ করে চতুর্বল এক বাঁবাঝার। এবং কথার লারি-মান প্যক্তৃ সংযোগ ও বিভাগ এই পক্ষ এন কালের ও নিকের। এবং পরু সংখ্যা পরিমান প্রকৃ সংযোগ ও বিভাগ এই হর এক আকাশের। এবং সংখ্যা পরিমান প্রকৃ সংযোগ বিভাগ বৃদ্ধি ইন্ছা ওয়তু এই অই এন ইবারের। এবং পরকু অগরেজু সভার পরিমান পৃথকু সংযোগ বিভাগ ও বেগ এই আই এন মনের। সমূতি পৃথিবী ভালি সব পুরেরে যথাক্রমে নিরুশন ভরিতেক্স।

वस चिति गैथहेतु भैता रूपवती सता।
विविधक्तु रसकाम गथकु विविधेतातः।
चर्यस्य आक्ष्म विविधेतारः।
चर्यस्य आक्ष्म विविधेतारः।
निव्धारितवाच सा विधा निव्धार्यात् स्वव्याः।
चरित्यातु तद्याधात् सेवाश्वयवधीतिकी।
साच विधा भवेदेष प्रतिवं विवयक्ताः।
चरित्रादिभैवेदेष प्रतिवं विवयक्ताः।
विविधाद्यक्तादिव वक्षाकान्य उद्यक्तः।

ত্র কিতি প্রহেছু নানাকপরতী নতা।
বিষ্ণু রসভর গদ্ধ হিবিধানত: ।
স্পর্লভস্যান, বিজ্ঞেয়ান্যংনুকাইশীত পাকরঃ।
বিজ্ঞাইনিত্যান সাংহ্যা নিত্যাস্যান্যকশা।
অনিত্যাত্ তদন্যাস্যাৎ সৈবাহবয়ব যোগিনী।
সার বিষা ভবেদেই ইন্দ্রিং বিষয়ভথা।
বোনিকানির্ভবেদেই ইন্দ্রিং ব্রাণলক্ষণং।
বির্য্যোদ্যুকানিক বৃদ্ধান্ত উদাহ্তঃ।

দেই সৰ মুদ্ৰেরে মধ্যে পৃথিতী গদৌর পদবায়িকারণ এবং ক্ষেত্ৰ লীত নীল অৱক ইত্যাহি নানা পুকার রূপের আপুর হয় ট अवः शृथिवीत हम एवं शुकांत प्रश्तूत भवन करूँ विक अपू अ ক্ষার। এবং পৃথিবীর গরু বুই পুকার নৌরভ ও অনৌরভ এক পৃথিকীয় স্থৰ্প পাকৰ অনুস্থাপাত অৰ্থাৎ না পীত না উৰু ফলত। বিখাতীয় কথাচ যে মুখ্য গালুর নগবাঞ্চিলারণ হয় ভাছার হাল পৃথিতী। এই সঞ্চলে পাহালে গ্রাভাব পুরুজ অব্যান্তির আপকা করিবা না বে ছেম্ব পাবাদে ও গর আছে ক্ষিত্র অতি অপুকাশিত একারণ তাহার বোধ হয় বা অব্যথা পারালের ভবে কিরুপে গভের বোধ হর। যে <u>পু</u>ব্য যে দুবের कुल बन्ध इष्ट स्म मुन्द स्म मुस्त्याह नमनाहिकाहन बन्ध दश अहे মিশ্লমবদন্তঃ পাৰাৰ দুংল জন্য যে পাৰাৰ ভব্ম ডাহাতে পাৰাৰের লমবানিকোরণ যে পাবাপের পরমাণু ডক্ষর)ত সিদ্ধ হয় যেমব মহাপটের দুব্দ কর্য যে বস্তু পট ভাহাতে মহাপটের দমবারি-কারণ যে পূত্র ডক্ষন হৈ দিছে আছে তথাই পাষাৰ পরমাণু জন্য যে পাৰাণ কৰা ভাষাতে গাবু দুৰ্ঘৰ পুষ্কা পাৰাণ পরমাণু ঋনঃ যে পাষাৰ ভাষ্যতে ও সূত্রা। গদু দিছ হয়। এবং যে যাহার সঙ্গ-বাহিকাংশ হর শে বমবার বমুবে_র তাহার আপুর হয় বেমব খটের সমবায়িকারণ যে কণাল লে সমহার সমূদ্রে হটের আশ্বর হর ভেমন গদ্যো কমবারিকারণ যে প্রিবী সে ও সম-বার বগুলে খালুর আপুর হয় অতথ্য বংশি যে বুব্র গালের আপুর হয় ডাহার নাম প্রিবী এই লগু লছণ নয়ব হয় ভরাগি পৃথিবীকু জাতির পুমাণ দর্শনার্থ নমবারি কাংণ পর্যন্ত কহিছাছেন ভাহা অবগত হ'ও ৷ লাভি ভিন পুকার হয় কারণভাব্যস্থক সিদ্ধা কাৰ্য্যভাৰদেশক নিকা ও পুড়াক নিকা ৷ যুৰ্যুদ্ধনি ৰাভি করেণ-ভাৰদ্ৰেদক নিভা যে কেন্দ্ৰ নুৰ্যাধি বৃদ্ধি যে লগবোগাদির কার্ণজা कांकार चयरक्तक पुरावाति क्या ३ नृक्यांति काफि कार्याकार-

দেনক নিজা যে হেড নুখানি নিউ বে ধর্মানির কার্যাতা ভারাঞ্চ অবচ্ছেদক সুধতাদি হয়। কর্মতাদি আভি পুভাঞ দিলা যে হেস্ক উৎক্ষেপণাদি কর্ম সর্বা এক মণেত্ বৃষ্ট হউতেছিঃ গৃহাজাবি কাতি কিন্তু পুত্যক্ষ দিলা হর না বে হেন্তু চুড ডেকঃ পুভূতি বুকেয়ে ক্রমন কাচিন্য ক্রম বুরত্ব বেধিতেছি ৷ অগতারি আতি পুত্রঞ নিদ্বাও কাৰণতাৰক্ষেক নিদ্ধা যে ছেন্ত জলাবি সৰ্বা এ**ক চলেট্** ৰ্ট হয় এবং ৰাণাৰি নিঠ যে শ্ৰেছেয় শমৰায়িকালেওা **ভাছার** অবদ্যেক অলভাবি হয় ৷ ঘটভাবি ভাতি পুত্ৰক বিভাও কাৰ্য্যভাবদেহনক নিদ্ধানে হেন্দ্ৰ সকল ঘটেট্টে এক অবয়ৰ এবং ঘটাদি নিঠ যে দ্ঞাদির কার্য্যভা ডাখার অবছেশক ঘটড়াদি ছয় ? ধর্মস্থাদি বাতি কারণতাবচ্ছেদক সিদ্ধাও কার্য তাবচ্ছেদক সিদ্ধা যে হেন্ত ধর্মাদিনিক যে ল্গাদির কারণতা ও যাগাদি জিলার: কার্য্যতা ডাছার অবচ্ছেদক ধর্মত্বাদি হয়। প্রথম্বাদি কাভি যেরুপে নিদ্ধা হয় তাহা এণ পুৰুৱলে ব্যক্ত হইবে তথাৰ পৃথিবীৰ লাভি कारश्कावरक्षक निक्षा करें या (क्ष शृक्षिकी निक्ष या अस्तुह बहन ৰাৱিকারণতা তাহার অবচ্ছেদক প্ৰিবীত হয়। কারণ বৃত্তি যে ধর্ম বিশেষ দে কারণভাবচ্ছেদক **শ্ব** এবং কার্য্য বৃদ্ধি যেখর্জ বিশেষ শ্বে কার্য্যভারক্ষেক হয় । এবং জলানিয় রূপ ওরস এক পুরুত্ত পৃথিয়ীর নানা পুৰায় বায়ুয় শ্লুৰ্ম অপাকৰ প্ৰিণীয় পাৰজৰে হেছ পাক পূৰ্ক প্ৰিনীয় কথন কয়িনত্ব কথন কোমণত্ব দেখিতেছি লভ-এম প্ৰিমী নানা রূপের আলুয়হয় ইন্ডানি বাক্ষ্যে যায়া পৃথি-ৰীয় এই ভিন পুকার সঞ্চৰ জাত করিয়াছেবা বে পুবঃনানা ব্লুপের আপুর কিয়া বড়িগ রবের আপুর কিয়া পাকরা স্কার্পর আপুর হয়। ভাহারনামপ্ৰিীঃ এবং দেই প্ৰিবী দুই পুকার নিভ্যা ও অনিভঞ্ ভাৰাৰ মধ্যে প্ৰমাণ্ডণা প্ৰিবী নিভটা ও বাগুকাৰি ভূপা প্ৰিবী व्यतिष्ठत । त्वरे व्यविद्या भृषिती व्यवस्य विनिकी रहा । व द्याद्य পুঞাকার পরমানুর বায়াই ঘটানির উপপত্তি হুইতে পায়ে অক-

নৰ পরভাগুহাতে ভিহু ঘটাবি বরণা অবরব বিশিষ্ট প্রিবীজে পুমাণাভাবের আলন্ধা করিবাবা বে হেন্দ্র যেমনখান্য পুথে এক মাম্রাশি এই রূপ একস্ব পুরীতি হর তেমন প্রমাধু পুঞ্জ হরপ মটাবিতে ও বংগলি একত্ব পুতীতি সম্ভৱ হয় তথালি পুত্যক কারণ বে সহস্বত উজ্ত রণ পরমাণ্ডে ভাহার অভাব পুরুক ঘটাদিরও পুরুজ হুইডে পারে বা বেমন শিশাচাবির অতীপুরুষ পুরুষ লিপাচাৰি সমুহের পুড়াজ হয় না তথাট এই রূপে পুমান নিদ্<u>বা</u> ৰে অবয়ৰ বিশিষ্ট ঘটাৰি ৰয়ণা পৃথিৱী ভাৰায় উৎপত্তি ও বিবাশ পুত্যক্ষ দিল্প অভএৰ অবয়ৰ বিশিষ্ট পৃথিবী অনিভ্যা হয় এবং বেজন অণুত্ব ও সক্ষা এই বুই পরিমাণের মধ্যে মক্ষা পরিমানের শেষ গগণাদিতে মাছে তেমন অণুত্র পরিমাণের পেব অবৰ্ণ্য কোন বন্ধতে আছে অভএন যে বন্ধতে অণুস্থু পরিমাণের শেষ আছে দেই বস্তুই পরমাণু হর তথাল এই রূপে পুমাণ শিষ্ক যে পরমাণু ভাছার উৎপত্তি ও বিনাশেতে পুরাণাভার পুযুক্ত পরমাণু বরুপা পৃথিবী নিখ্যা হয়। সেই অবরব বিশিক্টা নিভ্যা পৃথিতী তিন পুকার বেছ ইন্দুর ও বিবর। তাহার মধ্যে দেহ দুই পুকার বোনিক ও অযোনিক। দেই যোনিক বেহ বুই পুকার ভারারুল ও লওল। মানুবাধির বেছ ভারায়ুক। পলি পুভ্তির বেহ অধ্যা । অযোদিৰ বেহ বেহৰ উচিক্স ও পাণৰ পুত্তি দানা পুরুর হয়। ক্রমি ও মপকাদির দেহ বেবল। বৃত্তাদির দেই উদ্ভিজ্ঞ । সায়কির বেছ পাপক। মানুষাধি পরীরের পার্নিবজ্বের भूमान मेनुर्रात। मानुवारि पहीति त्वूच ७ खेकशतिह वर्षन भूतूक **লে কণীরত্ব ও তৈজনভূগির জান নে ভূম মাত্র যে হেত জুেলারির** বিবাশ কলে ও মানুবাদি শরীরে শরীরত্ব জান ও গনুগদি হেডক পাৰ্থিক ভাৰ ক্ইডেহে অভনৰ কেলাৰি মানুযাৰি পরীরের অনীরস্থানির পুলাণ নহে কিছ অলাবি মানুবারি পরীয়ের নিমিছ महत्व परकार (यक्षर समीप देशसर ४ राप्तरीय नहींद्र गार्किस)

পের সহসু পুসুক্ত উপতোগ করনযোগ্যতা আহে এবং কলাবিছ পুলান্পুৰ্ক কৰীয়ত্বাদিরব্বেহার হইতেছে ভেমৰামানুবাদিই পাৰ্তিৰ প্রীয়ে জনীয় ভাগাদির সন্তব্ পুরুক কেলাৰি আছে এক প্রিবীর পুষান্য পুষুক্ষপার্তিবছের ব্যবস্থার হাইকেছে ি এইপু পুয়াণাভাব পুযুক্ত পরীরত্ব আজি নহে কিন্তু কেউার আপুরত্ব ই চেষ্টা পরে পারীরিক জিয়া বিপেব অভগব বৃদ্ধাবি পরীরে অব্যান্তির আশক্ষা করিবানা যে হেন্দ্র লব্ধাবতী পুভূতির আৰু-কন আমু কংছাৰির পুনারণ নৰক মাধৰী পুত্তি নতার ৰেইছ দেবৰার পুত্তিরউর্ব করোগানুক্ব জিয়া বেধিভেছি ৷ ব্লাবির যে পরীর আছে ভাত্রি পুমাণ ভাত্তে পরীরারত্ত বাবুর বছক ভাত্যর পুমাণ আমুদি ব্লের ছিলপাথাত্টতে পুনর্রে ভার্পর্জের উৎপত্তি এবং অখতাবিব্জের পাথাছেরবারস্কর পুনর্ত্ত পারাপলুবাদির উৎপত্তি এবং বর্ত্তি হস্তাদিকে পরীয় ৰাবহার না হয় তরে শরীরের সক্ষণে অবয়ৰ ভিন্ন এই ভাগোন্ন निरम कतिया। अवः स्पेनिकः शृधियोत हेम्बिस सुध सद्यार খাুণেশ্রির পার্থিক হয় যে হেজুরপাধির ব্যক্তক না হইরা রানেুর ব্যঞ্জক দুব্য হয়। যেমন কুছুমণান্তের ব্যঞ্জক কৈল ও চল্লক কুৰুমাৰির পৰনানীত ৰূজ্যুখণ্ড পাথিব হর যে হেতৃ রুপাৰির ব্য**ন্তক** না ক্ইয়া গছের ব্যক্তক দুব্য হয় ৷ স্থাপেশ্বিয়নহিকর্যে ব্যক্তিসার বারণার্থ পুরুপদ। পজুরকের আবের পুতি লগ কারণ শত্রহ নহৰ্দ্যাৰণত গৰের ব্যক্ক যে জন ভাছাতে পাৰ্থিবত্ব না ধাকিকে ও ফডি নাই যে হেতু ডাদ্শ লল কেবল ভাদ্শ গছের ব্যক্ত নহে কিন্তু রবেরও ব্যক্তক হয়। এবং যে উপভোগের কারণ হয়। ভাহার নাম বিবর। সকল কার্য্য অন্টারীন হয় যে কার্য্য যাহার অণ্টাধীন হর দে কার্য্য লাকাৎ কিয়া পরমুরার অবল্য ভাষার উপভোগ ক্ষায় ভাঁহার পুনাৰ ভর্ষরি ন্পের বিপুর্ক ংঘৰ পুসাৰ লয়কৰ ভোগোৱা উপাৰ্থান ৷ বীজ ও পুৰোজৰ বিনা

কোন কাৰ্যের উৎপত্তি হয় না অতথ্য সপুকানি সুস্লান্তপৰ্যন্ত সক্ষপ পার্থিন বস্তুই অনিভঃ পৃথিবীর বিষয় হয় ৷ যধ্যপি পরীরা-ক্রিও বিষয়ত্ব আছে ভথাপি ভিষ্ রূপে কথন কেবল পিবেটর বিশেষ জাবার্থ ৷

ব্যালয় নিরপণ করিছেছেন।

वर्षः मुक्ता रसस्योर्गं जले मसुर कोतले। । बेस्स्य प्रवसन्तु सोसिजिय मुदाहतं । निव्यतादि प्रथमवत् बिन्तु देसमध्यानियं । इतियं दसने सिन्धु सिमादि विवया मतः ।

বর্ণঃ শুক্রো রসম্পর্শো জলে মধুর শীতলো। নেহতর দুবহুছু সাংসিদ্ধিকমুদাত্ত। নিত্যতাদি পুথমবং কিছু দেহসংয়োনিজ। ইক্সিয়া রসনা সিজ্হিনাদি বিব্যোষ্তঃ।

ক্ষেত্র প্রুথন খাগুর রস ও পীতন স্থান্তর । এবং কলে পুেছ ও খাভাবিক দুবত্ব আছে তথাল যে দুবঃ স্থেছের কিছা খাভাবিক দুবত্বের সমবায়িকারণ হয় তাহার নাম কলা এবং কল মিঠ যে সুহাদির সমবায়িকারণতা ভাহার অবচ্ছেদকত্ব অবহু আভির পুদাধ হয়।

পূর্ণক।

অংশর শুকুরপ কিয়পে সিদ্ধ হয়। মনুনাদির জলে নালরপাদির পুরঃক হইতেছে।

বিছার 1

যমুনাদির কলে যে নীবরগাধির' পুড্যক হয় ভাছার করেও আশুয়াধির নীশরগাধি কণতঃ কলের রুগ পুতুর যে হেতু পুনেয়কে

भुक्तिके जरम ७ करकांविटक मृङ्ग्यलर्थ भुक्तक व्देशकाह् ३ ু পূর্বক্ষ ৷ অলের মধুর রলে কিপুমাণ জলে পুড;ক্ষডা কোন রবের আনুভব হয় নাঃ নারিকেল জলাবিতে যে মধ্র রলেয় বোধ হয় নে কেবল আশুয়ের ৪০ে অন্যথা নদীর রবাদিতে অমু রবের বোধ হইডেহে অভবৰ জনে অনু রবও বছৰ হইছে পারে ! বিভার হরীত্তী কল ভজগানতর জলে সধুর রুলের বোধ ছয় অভশাব ছয়ীভকী কণ ভক্ষণ ভাগে মধুর রবৈর ব্যক্তক ইর, বেমন খল শক্তুরদের ব্যক্তক হয়। যদি বল যে হরীভকীয় ছয় রদ অতথ্য অপেতে হরীতকীর যে মধুর রদ ভাহারই ভুম হয় ভবে অনেতে কটুডিকাদিরসের ও বোধ হইতে পারে এবং আন্ন-লকী ফল ভ≢শানৱরও জলে মধ্র রলের বোধ হ**ইতেছে** অভগৰ সিভান্তমূকাৰণীয় হৌধুী চীকাতে আচাৰ্য্য বচন। নভঃ-ৰ্লহ'ইতে বুলিভা মধুরা যে ক্ষমণ ক্লধারা লে বীপ্তি পাইতেছে এবং ঘৃত্তচন্দ্রাদিতে যে, শীতলক্ল তাহার কারণ ভাহাতে শাতন জন সংসর্গ এবং জনের যে উষণ ক্লমি ডাছার কারণ জলো অগ্নানি সম্পর্ক অভএব শীতসরুর্গ কেবল রূপেই আছে 🗀 এক স্তাদিতে যে সুেহ আছে সেও স্তাদির মহঃব**ত**িয়ে জলীয় **অধি** ভাছারই সুহ অতএব সুেহ কেবল মলেই আছে। এবং পৃথি-ব্যানির বুক্ত নৈমিভিক হর তৈলানিতে যে বুক্ত **লেও তৈলানির** সধ্যবস্থা^{*} যে জলীয় ভাগ ডাহায়ই **দুবত্ত অভনব স্বাভাবিক দুবস্থু** কেবদ অদেই আছে ৷ স্বাভাবিক পুৰত্ব পুত্ৰজ্ঞ নিদ্ধ কাতি বিশেষ ছর। এবং অবের নিভাব আদি পূর্বের ন্যায় অর্থাৎ যেমৰ পৃত্তি-বী নিডঃ৷ ও অনিভঃ৷ এই দুই পুকার ডেমন রূপ নিডঃ ও অনিডঃ এই দুই পুকার হয় তাহার মবেঃ পরমাণ্ডরণ জল নিডঃ ৰপূৰ্বদি ৰৱণ কৰ অনিডঃ| ৰেই অনিভঃ কৰ ভিন পুৰায় বেহ ইন্দ্রির ও বিবর বিদ্ধু পৃথিবীতে ও জলেতে এই বিশেষ হয় যে পূৰিবীয় বেহু যোনিখ ও অযোনিৰ ঋণেয় দেহ কেবল অংগ-

নিছা। যেনন প্ৰিবীতে পাৰ্থিৰ পরীর পুলিছ তেমন বরণ গোকে বৃদ্ধীর পরীর পুলিছ আছে। এবং রদনা কলের ইন্দ্রির হর অর্থাৎ রদনেশ্বির কণীয় হয় যে হেন্ত গন্যুদির ব্যক্তক না হইয়া রদের ব্যক্তক লুব্য হয়। যেমন পজ্বদের ব্যক্তক অল গন্যুদির ব্যক্তক লা হইয়া রদের ব্যক্তক লুব্য হয়। রদনেশ্বিয় সমিকর্ষে ব্যক্তিয়ার বারণার্থ পুর্পেদ। এবং শিশিরাদি সমুদু পর্যন্ত সকল অলই অনিত্য কণের বিষয় হয়। আদি পরে করকাদি। করকাজে ক্ষিন্তু পুণুক্ত পার্থিবত্বের আশক্তা করিবা না যে হেত্ পূর্যন্ত কিরণানির সংযোগে পুরস্থ পুনুক্ত তাহার অগারত্ব পুত্যক্ত শিক্ত ইতিহেছে।

ডে:জর নিরপণ করিতেছেন।

रुधे उव्यक्षेत्रसम्बु खात्रूषे गुक्क सामर्। वैक्रिनियं दवलम्बु निव्यतादिव गूर्वेवत्। इत्त्रियं नयमं सिन्धु चित्रादि विवयेत्रसः।

শূর্প উক্তেজসন্তু স্যাদুংশং শুদ্ধ ভাষরং। নৈমিজিকং দুবস্বস্তু নিত্যতাদিচ পূর্ষকে। ইন্দুিয়ং নয়নং সিদ্ধু হিমাদি বিষয়োনতঃ।

তেনের ল্লপ উঞ্চ হয় তথার যে দুব্য উঞ্চ ল্লপের সমবায়িকারণ হয় ভাহার নাম তেনঃ এবং তেনোবৃত্তি যে উফ্চ ল্লপের
কামধায়িকারওতা তাহার অবচ্ছেদকত্ব ডেকল্ বাতির পুমান হয়!
চল্পুকিরণাদিতে এ ক্লেণের অব্যাপ্তর আশহা করিবা না যে হেল
চল্পুকিরণাদিতে ও উফ্চ ল্লপি আহেছ কিন্তু চল্পুকিরণে উফ্চ ল্লপি
কালীর ল্লপি আফ্র বড়ুকিরণে উফ্চ ল্লপি পার্মির ল্লপি আক্র এবং
চল্পুতে উফ্চ ল্লপি পুত্রকের অযোগ্য হয় একারণ চল্পুকিরণানিতে
উক্চ ল্লপের কান হয় না! এবং তেকের রপ পুরু ভারর অর্থাৎ
ব্যান্তিবিশিক্ত পুরু হয়। পুনিব্যাদির পুরু রপ দীতি রহিত হয়

ভাষার পুনাণ কচিন্যালি। বহিতে সুবর্ণালিভে ও মরকভালি পুকৃতিতে দেৱল পাথিব রূপে আক্রম আছে একারণ ভাষার পুতৃত্ব হর না কিন্তু চলুকিরণানিতে আফ্রান্ডের অভাব পুতৃত্ব পুত্রত হইতেছে। এবং তেনের দুবত্ব নৈমিনিক হয়। সুবর্ণারি দরণ তেনে বিশিষ্ট বহির সংযোগে নৈমিনিক দুব্যুক্তর পুত্রত হউতেছে। যদ্যলি অধ্যানিতে সমবায় সমূদ্রে নৈমিনিক দুবত্ব নাই তথালি নৈমিনিক দুবত্ব বিশিষ্টে বর্ত্বানা পৃথিবীত্ব ভিনাবে দুবত্ব ব্যুক্ত ব্যুক্ত বালিও আদুল কাতি ধরণ পরস্কার নহয়ে আছে।

প্রশক্ষঃ প্রণাধির হৈজনত্ত্ব কিপুমাণঃ লিভাতঃ স্বণাধি টেজন হর যে হেন্ড দুবতু নাশের <u>পু</u>তিবনুকের অভাবে অভার বছি শংযোগে ও সুবর্ণদির দুবজু নাশ হর না ৷ পৃথিবীর ও কলের দুববু কিছ অধি লংযোগ নাশ্য হয়। এবং জলের ন্যাক তেজঃ পৰাৰ নিত্য ও অনিত্য এই দুই পুঞায় হয় ভাহায় মধ্যে পাং-মাণু ষরণ তেজঃ নিড্য খ্যপুকাদি ষরণ তেজঃ অনিড্য বেই অনিত্য ডেজঃ তিব পুকার হয় দেহ ইন্মিয় ও নিবয়। এবং মেনৰ ৰণীয় অবোনিৰ দেহ বয়গলোকে পুনিশ্ব ভেমন ভৈমন অবো-নিৰ ৰেছ দুৰ্ব্যাদি গোকে পুলিছ আছে**। এবং নয়ন ভেজে**য় ইপ্ৰিয় হয় অৰ্থাৎ নয়নেপ্ৰিয় তৈজন হয় যে হেল প্ৰকীয় লুশাদির ৰঙ্গুক না হইলা পরকীয় রূপের বঙ্গুক বুখ্য হয়ঃ যেলে পুনীপ পরকীয় প্লুলাধির ব্যক্তক বা হাইয়া পরকীয় রূপের ব্যক্তক বুৰ্য হয় ৷ পুনীপে স্বক্ৰীয় স্থাপতি ৰাজ্ঞকন্ত পুযুক্ত বৃক্তীয়ানিছি হয় ভাছার বারণার্থ পুথম পরকীয় পদ বৈকীয় রূপের ব্যক্তক পাৰ্মিৰ ঘটানিতে ব্যক্তিমার বারণার্ম বিভীক্ত পরকীর পায় ৷ নয়নে-শ্বিক লামকৰে ব্যক্তিচার বারণার্থ দুব্য পদ। এবং সূবর্ণাদি বাছি পর্য্যন্ত শবল তেজই অনিভ্য বেজের বিষয় বৃদ্ধ।

ষারুর নিরুলণ করিভেত্ন।

श्रापाननेश्नुकारहीतः समैकु पर्वनितः। विक्रममन्द्रवित्र समित्रकः। पूर्वपत्रिकात्रायुक्तं देशवापि लगिनियं। प्रवादिकु मधारायुक्षमेनी विवयोजनः।

অপাক্ষোষ্ট্ৰাইশীতঃ স্পৰ্শন্ত পৰ্যনমতঃ ৷ তিৰ্য্যুগ্ৰমনবানেৰ ক্ৰেয়ঃ স্পূৰ্ণাদি লিক্কঃ ৷ পূৰ্বদিত্যতাদ্যক্ত দেহব্যাপি কৃপিন্দ্যি ৷ প্ৰাণাদিকু মহাবায়ুপৰ্যভো বিৰয়োমতঃ ৷

ৰাধুর দ্বৰ্ণ অপাক্ষ অনুফাণীত হয় ৷ পৃথিবীর দ্বৰ্ণইতে বিশেষ করিবার নিমিত্ত লুর্লের অপাকজ বিশেষণ ভখাচ যে ৰুব্য অপাক্ত অনুকাশীত সুপেঁর ব্যবারিকারণ হয় ভাহার বাস ৰাষু এবং বালুসৃত্তি যে অপাকর অনুকাশীত রূপের সমবারিকানে **এজা ভাহার অবচ্ছেদকতু বার্তু জাতির পুমাণ হয়। বায়্র ব্র**ডের পুথাৰ স্বৰ্শব্ৰণ ওলেই আশুহজু ৷ যেং বস্তু ওণাশুহত্য দে পুৰঃ হয় বেমন পুৰিব্যাদি। বাহু দুব্য পদাৰ্থ হয় যে হেড রূপ বয়প ওপের আপুর হর যেমন রপ্রণাপুর বহিঃ এবং বার্র গমন বজ হর ৷ এবংঅপাক্ত অনুফাশীতরূপিও শাধাপলুবাদির কয়ন হেন্ডক বায়ুর **অনুমান হয় ৷ এবং তেজের ন্যায়** বারু নিভ**ুও অনিভঃ এই পুই** পুকার হয় ভাহার মধ্যে পরমাণু বরণ বারু নিডঃ বঃপুকাবি মুক্লণ ৰাৰু অনিভঃ! সেই অনিভঃ বায়ু তিন পুৰায় বেহ ইণ্ডিয় **ও বিষয় ৷ এবং যে**মৰ ভৈত্ৰৰ অযোগিত ৰেছ সূৰ্য্যাৰি লোকে পুৰিত তেমৰ ৰায়বীয় অধোনিক বেছ বায়্বোকে পুৰিত আছে ই এবং পিশাচাদির **অংহানিক পরীর**ুও বার্থীর কানিবা ি এবং ভূগিন্দুর শরীরব্যালি হয় তথাচ ভূগিন্দুর ল্লার্শর ব্যক্ষক অর্থাৎ বায়বায় হর যে হেডুরপানির ব্যয়ক বা হইরা রুর্বের ৰ**ুছ্ত পু**ৰ্য হয়। বেনৰ পটার বছবীয় বলিবের গৈত্যব্য**ন্ধ**ক

ব্যজনবায়ু রাণাদির ব্যক্তমা হাইয়া সুর্পের ব্যক্তম পুরং হয় । অগিন্ট্র সমিকর্যে ব্যক্তিগার বারণার্থ শুব্র পদ। এক পুনি আদি মহাবারু পর্যন্ত সকল বার্ই অনিডঃ বায়ুর বিবয় হয়।

আকাশের নিরপণ করিতেছেন।

জাৰাগ্ৰনন্ত বিশ্বীন গ্ৰহী বীৰীবিদ্যানুক। জাকাশস্তি বিক্তেয়ঃ শুৰো বৈশেষিকোওণঃ।

শনু আকাশের বৈশেষিক গুণ হয়। আকাশ এক হর অভএব ভদুটবাদির ন্যায় আভি নহে কিন্তু শাব্রুর আপুরত্ব। বেপুর্যু শাব্রুর আপুর হর ভাহার নাম আকাশ। আকাশে বিশেষ গুণারুরের ব্যবক্ষেরের নিমিন্ত গুণেতে বৈশেষিক বিশেষণ। আকাশের সুখ্য-ছের পুমাণ শাব্রু সুরুণ গুণের আপুরত্ব এবং নিভ্যান্তর পুমাণ বৃশ্ব পুরিভাবের অপুভিযোগিন্ত। আকাশের শারীর ও বিবর অবত্তর হয় একারণ কেবল ইন্মিক দর্শন করাইতেছেন।

द्राज्ञयम् अवेत् कीषं,

ইন্দ্রিয়ন্ত্র ভবেৎ শ্রোবণ,

পুৰণ আকাশের ইপ্রির অর্থাৎ পুরণেপ্রিয় আকাশ হর যে হেন্ত পর্বের আপুর। যেনন যে পরের আপুর হর না শে আকাশ হর না। আকাশ নামবতঃ এক হর পুরণ কিন্তু বাজি তেনে ভিন্নং অভবর পুরণ কিরুপে আকাশ হইতে পারে এই হেন্ত কহিতেহেন।

হন: লগ্নঃ শুদানিন:, একঃ সমহপূর্গাধিতঃ,

্যন্তি আকাশ এক হয় তথালি কৰ্ণকুণী পুতৃতি উপাৰির ভেগেভিয়ং হয় !

का.नद्र निद्वर्गन कहिएस्ट्रहरू ।

अकार्या भनवः बाजी अवसामाजनेर भवः। बरा**ःवर**तयोशेतुः,

জন্যানা- জনকঃ কাকো জগতাসাপুয়ো মতঃ। পরাহপরস্থীহেতুঃ,

कान बन्धरहर्माद्वर बनक श्या । कान निर्श्वर बन्धर জনকত্ব সেই কালের নিভ্যত্ত্বে পুগাণ হয় ৷ এবং কাল কাতের আৰুয় হয় তথাৰ ইদানী ঘট আছে ভদানী ঘট আছে ইভাৰি পুঞীভিতে যে সম্বন্ধে ঘটাৰি পুঞার হয় সে সমূন্ সংযোগাৰি ৰছে কিছ কাল্যটেড কালিকবছনু অভএৰ বেই বছনু কাবের পুষাৰ ছয়। এবং কলে পরত্ব জানের খা অপরত্ব জানের অসংখারণ নিমিয় কারণ ছয় তথার পরস্বাপারস্ব জ্ঞানের অবাধারণ নিমিস্ক কারণস্থ অর্থাৎ পরজাপরস্বের অসমবায়িকারণ যে সংযোগবিশের ভাছার আপুয়ত্ব কালের পুমাণহর । কালের একত্পুযুক্ত কালভু ভাতি নহে কিছ জগতের আশুহত্তা হে গুব্য কালিক বিশেষণতা নমুনে জগ-তের অ'শুটা হয় ভাহার নাম কাল ৷ মহাকালে কালিকবছকে ব-ৰণ ৰভাই আহে এই পুড়ীডিয় অনুয়োধে মহাকালে কালিকসহছে আকাশানির ও বিদ্যমানতা শ্বীকার করা যায়। জন্যবস্তুমাত্তের কাল উপাধি হয় কিন্তু বিভিন্ন কাণীন বস্তু হয়ের কালিক লয়নে ক্ষাণার আধেরতার অমানঃ। কালের দুব্যজের পুমার পরাপরস্থ ৰৱল গুণের আশুরুত্ব। যদি কাল এক হয় তবে হল দণ্ড মুমূর্ডারি তেৰ বিৰূপে সমূৰ হয় এই হেৰ কহিডেছেন !

चनादिः भादुमाचितः,

क्रशासि:म्हामूशा्विजः,

কাৰণি কাল এক হয় ওখাপি উপায়ে তেনে ক্ষণ গওমুহুর্তপুষ্ট দিন রাজি সাল বংলয় ভূত ভবিষ্যুৎ ও বর্তমান ইত্যাদি ব্যবহারের বিবর হর। যে কাল বর্তমান মুখনের পুরিযোগী হয় ভাহার নাম ভূত । যেমন গভবিবন। যেকাল বর্তমান পুরাজারের পুরিযোগী হয় ভাহার নাম ভবিবাং। যেমন আগামি বিবন । বেকাল বিনটা পুরাগভাবের ও ভাবিষুখনের পুরিযোগী হয় ভাহায় নাম বর্তমান। যেমন অবঃ কালের ভূতত্ব ভবিষ্ঠানির ব্যায় ঘটপটাবির ও ভূতত্ব ভবিষ্ঠানি আনিবা।

দিকের নিরপণ করিতেছেন ।

ৰুহাওলিকানি খাইনুইবা নিজা নিমুখন। দুরাহন্তিকাদি খাহেজুরেকা নিজ্ঞা দিশুচতে।

দিক্ একা নিড্যা এবং স্রজ্জানেরও অন্রজ্জানের অসাধারণ
নিমিত্ব কারণ হয় তথাচ স্কুজানুরত্বানের অসাধারণ নিমিত্ব
কারণত্ব অর্থাৎ গুরুজানুরত্বের অসমবায়িকারণ যে সংখারা
বিশেষ তাহার আলুগত্ব দিকের পুমাণ হয়। যে গুরুগ দুরুজানুরত্ব
জানের অসাধারণ নিমিত্তবারণ হয় তাগার নাম দিক্। দিকের
একত্ব পুমুক্ত দিক্ত অতি নহে কিরু স্রত্বাস্রত্বজানের অসাধারণ
নিমিত্ব কারণত্ব অর্থাৎ স্রত্বাস্রত্বের অসমবায়িকারণ যে সংযোগা
বিশেষ ভারণত্ব অর্থাৎ স্রত্বাস্রত্বের অসমবায়িকারণ যে সংযোগা
বিশেষ ভারণত্ব আলুগত্ব। দিকের গুরুত্বের প্রমাণ স্কুজানুরত্ব
স্কুল গুণার আলুগত্ব। দিক্ ও কাল ইপারহাইতে অন্তিরিক্ত
এবং সার্বিভ্রান্ত্বের পুতি দিক্ কারণ অতথ্য স্তর্গাণ দিক্ নিভার
হয়। যদি নিক্ একাহ্য ভবেপ্রতী পুতীলী উদীলীও অবালি ইত্যানি
ব্রহার কিরুপে উপপন্ন হয় এই হেল ক্রিভার্ন।

उपाधिभेदादेवा/पि पाचादिवपदेशभाव्।

উপাধিভেদাদেকাইপি প্রাচ্যাদিব্যপদেশভাক্।

যাধ্যপি দিক্ এতা হয় তথাপি উপান্ধিতেদে পূর্ণ পশ্চিমা উত্তরা ও ব্যক্তিশ ইত্যাহি ব্যৱহারের বিষয় হয় ৷ যে দিক্ যে ভাগে যে পুরুষের উত্তর বিরিয় বহিহিত। হয় যে দিক্ যে ভাগে যে পুরুষের मूनिहरू बक त्य विक् त्य कारन त्य शृक्तवह केनह शिविह बहाहिका इव तन विक् तन कारन तन शृक्तवह शुक्ति इस । बक ता विक् त्य कारन त्य शृक्तवह नृत्यकह निविद्या इस ता विक् ता कारन तन शृक्तवह केवोडी इस बक त्य विक् त्य कारन त्य शृक्तवह नृत्यकह बहाइका इस तन विक् ता कारन तन शृक्तवह स्वाहि इस त्य त्य नकनवत्वहरू जैक्दह नृत्यक चे.दक बक्टे विश्रम साहरू ।

আন্ত্রার নিরণণ করিতেছেন।

ब्राक्वेत्रियायश्चिताता,

আবেন্দ্রাদ্য স্বিধাতা,

আন্ত্রা চল্টাদি ইন্ট্র গণের ও পরীরের অধিঠাতা অর্থাৎ
কর্মা হরেন। যে দুব্র পুনদুংধাদির সমবারিকারণ হর ভালার নাম
আয়া। । আন্তার পুনদুংধাদির সমবারিকারণ হর ভালার নাম
আয়া। । আন্তার পুনদুংধাদির পুনাণ পুধনুংধাদি স্বরুপ গুণের
আপুন্ত। আনুত্র লাতি হয় যে হেন্ত আন্তানিপ্ত যে পুধনুংধাদির
সমবায়িকারণত্ব ভালার অবচ্ছেদক হয়। সেই আন্তত্ব লাতি
আবির নগার বুল্লাভে ও আহে অভএব পাল্লে ও পোকে বুলুকে
পরমায়া করেন ভবে যে বুল্লেভে সূর্যদুন্ধাদির উৎপত্তিনা হর
ভালার কারণ স্থলংধাদির হেন্ত যে মুন্দুন্ধাদির উৎপত্তিনা হর
ভালার কারণ স্থলংধাদির হেন্ত যে মুন্দুন্ধাদির ভালার অভান।
ফ্রাণি আন্তা আমি সুনী আমিলুংধা ইত্যাদিমানসপুত্রকার বিষর
অর্থাৎ পরীরাদি হইন্ডে ভিন্ন হয়েন ভবালি পুথমতঃ বেহান্ত্রআদি পুত্রিকে আন্তা পরীরাদি হইনে ভিন্ন এই বোধ কলাইবার
নিমিত্ব পুনাণ দুর্লন ভরাইতেহেন ।

बरवंदि सबर्धनं, कृत्रप•िः मकुर्व•,

যে ছেবা কংগদকর্তিক হয় অর্থাৎ বেমন ছেবনলিকার করণ কুটারাদি সংবুধ ছেবার অভাবে ছেবন কিবার উৎপত্তি হয় না কেমনজানের করণ ইন্মির সংস্থে জাতার অভাবে আনের উৎপত্তি হয় ■ ! অতথ্য কুটারাদি বরণ করণের কর্তার ন্যার চক্ষুট্রি ই-পুরি মরণ করণের ও এক অতিরিক্ত কর্তা অবশ্য ক্রুনীর হয়ের তথাচ চক্ষ্যাদি ইপ্রিয়ের কর্ত্রিশে পরীরাদিহইতে তিম্পক আছা দিও হইলেন ৷ চক্ষ্যাদি ইপ্রিয়ের পরীরাদিহইতে তিম্পক কর্তার কল্পনে কি পুরোজন পরীরকেই কর্তাবলি এই পুন বুর ক্রিতেহেন

ছহাহল ৰ খননা ভন্ন অভিযাহন। শরারস্য ন চৈতন্য• মৃতেকু ব্যক্তিগারতঃ।

শ্রীর চৈত্রসংহিত হয় যে হের মৃতশ্রীরে চৈত্রসভারপুর্জ ব্যক্তিয়ার হয় ভর্মায় কর্ত্ত্বের পুতি জ্ঞানকারণ অতএব শরীরের জ্ঞানাভার পুরুজ কর্ত্ত্ব সম্ভব হয় বা ।

পূর্ণকা বেমন আমার্থিগের মতে মৃত্পরীরে জানাভাব পুরুক ব্যক্তিচার হর তেমন আম্মার কর্ত্বাধী যে ভোচরা ভোষারবিগের মতে ওমূক আত্মাতে জারাভাব পুযুক্ত ব্যক্তিচার হর অভনৰ ভোমারদিনোর মতে মুক্ত আন্ধাতে পাণাভাব পুরুক্ত ক্সানাভাবের ন্যার ক্সামার্থিগের মতেও মৃতপরীরে প্রাণাভাব পুযুক্ত জানাভাবে কি ছতি। বিদ্বান্ধ । যদি পরীরের চৈতন্ত থাকে তবে ৰালক কালে দৃষ্টবন্ধ্য় ঘৌৰনস্থালে সুরুগ হইতে লারে না বে ছেভ অবয়বের ছ্বানবৃদ্ধি পুযুক্ত পরীরের পুনঃং উৎপঞ্জি বিনাশ হয় একারণ বাল্য শরীরছইতে যৌবন শরীর তিম্মুর যদি বল ভিন্ন প**্রীরে ও অরণ স্থা তবে পরীরের চৈত্**ন্যবাদী যে ভোমরা ভোমার দিগের মতে এক সবের দ্টাবস্তুর স্করণ অন্য সবের কেন মাহর ! এবং যদিপরীর পচেতন হয় তবে পদ্যোজাত বালকের ভবলানাদিতে পুবৃত্তি হাইতে পারে না যে হেড ভারুণ পুৰ্বির পুতি ভ্ৰণান আমার সুধের নামন এই রূপ ইউ লাধ্যতা জ্ঞান কারণ হয় ভাবৃপ আলকের কিছ সে কালে এ পুকার ইঞ্জ দাৰনতা **আন হইতে পারে** সা। **আতার** চৈতন/বাধী যে আমর।

আলার্টিগের মতে কিছু এরণ বোৰ হর না যে হেত বাল্য যৌ-ৰম শ্ট্ৰীয়ের ঐক্য না থাকিলে ওআছার ঐক্য আছে এবং পুতি কলে শরীর ভিত্র হাইলেও আঝার ঐক্য পুর্যুক্ত পূর্ব করে অনু-ভূক যে স্কলপানে ইন্ট নাধনত তাহার নেই কালে নারণ হয় প™াৎ বাশকের স্তনপানে পুর্তি হয়। অতথ্য কর্ম পুশ্ত বান্তবৎ-সাধির ও শাধাদি গুহুণ দেখিতেছি। এতাবতা আরার নিড,ইও সিভ হুইপ হে হেড সৃষ্টির অনাদির পুষ্ক আ্যা ও অনাদি হয়েন। অনাধি যে তাব পদ। এঁতাহার নাশ হয় না। অনাদি থে পুলভার ভাষার নাপদর্শন পুরুক্ত ভারপর্যন্ত কথন চৈচ্চুরানি ইন্দুর জানাদির করণ ওখর্ডা হর এই আপজার নিবারণ করিতে-হেৰ1

तथालवेदिन्द्रयासामुग्रधाते वर्थ स्कृतिः।

তথাকৃষ্টে দিন্দ্রিয়াণামূপহাতে কথ- মৃতিঃ। আমতমুঠানি উল্লিন্ধ সচেতন হয় তবে পূর্বে যে যন্ত্র যে ইন্দিংচর ধ্যোচর হুইয়াছে লক্ষাৎ দৈবাৎ লে ইন্দ্রি রর নাশ হুইলেনে বস্তুর ৰৱণ হইতে পারে না যে হেড দে বস্তুর পূর্নিম্ভাবক ইন্দ্রিয়ের **অভাব আছে। একের অনুভূত বস্তুর হ**রণ অনেচর হ^{ুল}তে পারে না বে হেম্ব অনুভব ও মারণের সামানাধিকরণের ভার্য্য কারণ ভার আৰ্থাৎ পূৰ্বে যে বস্তু ষৎকৰ্তৃক অনুভূত হয় পশ্চাৎ দেই বস্তু তৎ কতুঁক সূত হয় এইরপ কাষ্ট্র কারণভাব ই এতাবতা চক্রাণি ই ন্দ্ ছের ওটৈডন)ভোব পুযুক্ত কর্ত্ব।ভাব সিদ্ধ হটল ! অনিড্য চক্রু-হাদি ইন্থিকের কর্তৃত্ব না খাকুক্ কিন্তু নিত্যমনোরণ অন্তরিন্দ্রের কর্তুৰে কিছতি এই আশক। নিধারণ করিবার নিমিত কহিতেহেন।

अनेर्दाय न तथा जानाधानध्यक्तं तदा भवेत ।

मन्तरि**ण न उथा उद्यानाग्यक्तश्रकः** उमा उत्रूर् মনের ও চৈত্তব্য নাই যদি মনের চৈতন্যপ্রাকেভবে জ্ঞানাদির

পুত্যক্ষইতে পায়ে না যে ছেন্তমনঃপরমানু শ্বরণ হয় অভএব মনে-

তে পুড়াক্ষের কারণ যে মহত্ব ভাছার জভাব পুযুক্ত মনের অতীবিশ্বত্ব হেজক মনত্ব জানাদি ও অতীক্ষির ছবা যেমন পুড়াক্ষের
কারণ উভ্তরপের অভাব পুযুক্ত শিশাচাদির অতীব্দিরত্ব হেজক
শিশাচাদি বৃত্তিগদার্থ ও অতীব্দির হর। এভাবতা মনের ও হৈজন্যাভাব পুযুক্ত কর্ত্বাভাব শিল্প হইল । এই সমূদ্র বাজ্যের
ভাৎপর্য্যার্থ এই যে জীবাল্লা পরীরাদি হইতে ভিন্ন হৈজন্য বিশিউ ও ইন্দ্রাদির কর্তা। যদি আয়া অতীন্তির হরেন ওবে মনের
ন্যার আত্ম বৃত্তি জানাদি ও অতীব্দির হয় অভএব আলার পুত্রক
বিব্যুত্ব শশ্বাপন ক্রিতেছেন।

यसीत्यसीत्ववीत्थासीत्विशेषम्भागाः। श्रमाभ्यमाणुद्याभ्यत्रका वित्मयसगरगण्डः।

কানাৰ সুত্ৰপ বিশেষ সূধের সন্তন্ত হেতক ধর্ম ও অধ্যর্মের অপুর যে আত্মা তেঁহ পুর)জ বিষয় হয়েন অর্থ আত্মার পুরু:-(कार शृक्ति विराणिक गृह्मत मध्य काराम बाह्य । विराणिक गृह्मत मध्य बहुकि-য়কে আলায় পুড (ক হয় না যে হেড আমি জাঠা আমি কর্তা আমি সুখী আমি দুংখী ইতঃদি পুকার পুড়ীতিই হয় কিছু কেবল আরি এ পুকার পুতীতি হয় না । যদি শরীর ধর্মাধর্মের আপুর হয় তবে ব্দতি যুক্তি পুমাৰ নিছ যে শহীরান্তরে কৃত কর্মের শহীরান্তরে কল ভোগ তাহা অবস্তব হয় যে হেৰ প্রীয় বুরণ আলুফের মাপে পর্যাধর্য বরুণ জাশিতের নাশ হয়। এবং যদি পরমান্তা ধর্ম্বরের আশুর হরেন তবে তাঁহাতে ও জন্য দুঃধাদির উৎপত্তি হুইভে भारत किंदु जोराका धर्याधर्यंत चामुझ **ट्रेस्ट अ स्टाट इस** ना যে হের জানের নিচান্ত পুরুক্ত শরীরান্তরে ও গর্মাধর্মের মাশি হর না। অভিনয়িত বস্তুর বাভাবাতে সুধ বুংধের উৎপত্তি रक्षक जीवांबात अतः वृथं मृश्टं विस्तावांकाय । मुकीस स्टब्स আন্তাতে পুডাক পুমান দর্শন করাইয়া পরকীর বেছে অনুমান পুলাৰ দৰ্শন করাইতে হন 🗈

मकुष्ताचर नुमेथेरत्य, शुक्रुताग्यर नूरमद्रशारुद्रः,

পরতীয় বেছে পুর্তি আদি হৈতক এই আজার অনুমান হর পরীরে মন্থাদির জভাব পুরুজ এহানে পুরুতি পরে চেটা । লা-গ্লিক ব্যাপার বিশেষের নাম চেটা তথাচ চেটা কোন ব্যক্তির বন্ধু সাধ্য হয় অভএব চেটা হেত্তক বন্ধু বিশিট আলার অনুমান হয় এইভাব। দ্টান্তদর্শন করাইতেছেন,

> হখ সম্ভব জাহখিঃ, ব্লথ গাত্যেব সার্লিঃ,

যেমন রথের গমন হৈন্তক দার্থির অনুমান হয়! যাংগি রখের ফর্ম চেন্টা হয় না তথাপি যেমন গমন দ্বুল কর্মাহেন্তক রথে লার্থির অনুমান হয় তেমন চেন্টাপুরপ কর্মাহেন্তক পরকীর দে-হে যান্ত্রবিশিক্ট ঝাল্যার অনুমান হয় ৷ ড়খাচ এ ম্থানে চেন্টা ছেন্ত মহে কিন্তু কর্ম সেই কর্ম দ্টান্ত স্থলে গমন পুরণ এবং দাকী। ছ হলে চেন্টা পুরপ হয় অতএব দ্টান্তানিতি দোব হয় না এই ভাব! এই দ্টান্তের ধারা পরীরের রথ পুরণত্ব এবং আন্ধার লার্থি ব্রপত্বও পুতিপন্ন করিবাহেন!

बार्ड्स्पालवीक्ष्यं मन्त्रमाज्यानेत्रमः।

অহকারস্যাশুয়োহয়- মনোমাত্রস্য গোচর: 1

এই আয়া অহকারের আপুর অর্থাৎ অহণ এই পুকার পুতী-ভির বিবর হয়েন। পরীর অহকারের আপুর হয় না বে ছেড পূর্ব পরীরের নাপ হইলেও পেই আনি এই পুকার অনুভব হইতেছে। এবং এই আখা মবোমাত্রের গোচর অর্থাৎ চঞ্চানি বহিতিপুর অন্য পুত্যক্রের বিষয় হয়েব না কিছু মানৰ পুত্যক্রের বিষয় হয়েন যে হেড বহিরিপুর অন্য পুত্যক্রে রুগানি কার্থ হর ৷ আজার যে পুরোজ বিজ্যু ও বুছাদি দর্দশ রগাপুরত্ব ভাহা ল্লট করিবার নিমিল কহিতেছেন ৷

विभुक्तादि गुरुवान् विजूर्व्याहि स्वातान्

এই আরা বিজু এবং পূর্বেক্ত বুর্বাদি স্তদশ গুণের আশুর হয়েন।

সমূতি পুগল সহতি জনমে বৃদ্ধি কত পুকার হয় ভাহা দশন করাইতেহেন।

> वृत्रिक्त दिविधा मता, चनुभूतिः कृतिचसादरनुभूतिचतुर्विधा । प्रवस्तरप्रश्रृतिचित क्षीपमिति ग्राम्बर्जे ।

বৃদ্ধিরু বিবিধা মতা, অনুজ্তি স্তিকস্যাদংনুজ্তিকজুরিধা। পুত্যকমংপ্যংনুমিতি তথোপমিতি শায়ুরে।

বৃদ্ধি দুই পুকার হয় অনুভব ও অরণ। সেই অনুভব চারি
পুকার পুত্যক্ষ অনুমিতি উপায়িতি ও শানু। এই পুত্যক্ষাদি অনুভব
চল্লউরের করণ যে পুত্যক্ষ অনুমান উপায়ান ও শানু ভাহার নাম
পুমাণ। চক্ষরাদি ই শিয়ুর করণক যে অনুভব তাহার নাম পুত্যক্ষ।
সেই পুত্যকের করণ যে চক্ষাদি ই শিয়ুর তাহার নাম পুত্যক
পুমাণ। ব্যান্তি জান করণক যে অনুভব তাহার নাম অনুমিতি।
সেই অনুমিতির করণ যে ব্যান্তি জান ভাহার নাম অনুমান পুমাণ।
সাদ্ধ্য জান করণক যে অনুভব তাহার নাম উপায়িত। সেই উপায়িতির করণ যে অনুভব তাহার নাম উপায়িত। সেই উপায়িতির করণ যে আনুভব তাহার নাম উপায়াত। পর
ভান করণক যে অনুভব ভাহার নাম উপায়াব পুমাণ। পর
ভান করণক যে অনুভব ভাহার নাম শানু। সেই শানুর করণ যে

পদ্ভান ভাহার নাম শবু পুমাণ I করণ ও ব্যাপ্তির সভগ পশ্চাৎ কহিবেন-I

পুর্ব্যক্ষ কর পুকার হয় ভাহা কহিতেহেন।
ক্ষীনভাবি মনীনিল গুলহাল বন্ধিল নাই।
ব্রাণজানি পুর্ভেদেন পুর্ব্যক্ষণ বন্ধিণ মতং।

নেই পুড্ডক খাণ্ড আদি নামতেলে চ্য় পুকার হয়। ছাণ্ড হাৰৰ পুত্ৰে চাক্ত ডাচ ও মানস ! নাদিকা কন্য পুড্ডকের নাম শুণক। কিছা কন্য পুড্ডকের নাম রাজন ! কণ্ডন্য পুড্ডকের নাম পুত্ৰে। চকুজন্য পুড্ডকের নাম চাক্ত্ৰ। চর্ম জন্য পুড্ডকের নাম ডাচ। মনো জন্য পুড্ডকের নাম মানস। কোন্পদার্থ কোন্ ইপ্রিয়ের বিষয় হয় ডাহা কহিতেছেন।

> श्रावक गीवरीमधी मधलादिरशी स्मृतः। तथा रसीरसवायाच्या सन्देशीय स्रोतः।

হ্রাণস্য গোচরোগদ্ধো গদ্ধত্বাদিরহুপি মৃতঃ ৷ তথা রসোরসক্তায়াস্তথা শহ্বোহুপিচ শুণতেঃ ৷

াক ও গগগাদি পূগের গাহ। হয়। আদি পারে সুরভিত্ব ও আসুরভিত্বানি। রস ও রসভাদি রসনার গুটহা হয়। আদি পারে মধ্যজাদি। পার ও শর্জাদি পূবণের গু.হা হয়। আদি পারে বর্ণভূ ও ধুনিজাদি। গগাদির পূতাকে গগবিভি গগজাদির ও পূতাক হয় স্কাদির আপ্রের পুতাকে হয় না যে হেন্ত ভাহাতে পুলাদির সম্মান মা বিভ্র ভূগাদির গুলি। গলাদি হেন্তক গলাদির আপুন্রের অনুমান হয়।

जहत्तकमं नयभस्य गावरी त्रवासि तहन्ति एस्झसंकी। विभाग संवेगामगाध्ययस वेष प्रवतं महिलासनुतं। विभाग संवेगामगाध्ययस वेष प्रवतं महिलासनुतं। विभाग वाति वेग्निहिलं समगविष तहार्थः। स्टब्सिट वक्षुः संवेगास्यवेशिहृतकस्वीः। উত্তৰপ নয়ন স্পোচরোদুব্যাণিতৰভিপ্থক্স-থে বিভাগ স-যোগপরাহপরত্ব সেহ দুবত্ব-পরিমাণযুক্ত-। ক্রিয়া- জাতি- যোগ্যবৃত্তি- সমবায়ক্ষ তাদৃশ-। গৃহাতি চকুঃ স-যোগাদালোকোজুতৰপয়োঃ।

উভূত রণ রুণজুদির সহিত চক্ষ্পাহ্য হয়। উভ্তপানুর ভাৎ-প্যায়র্থ পুত্রক্ষ যোগ্য। পূর্বোক্ত গদাদি ও উভূত কানিবা যে ছেখ পাবাণাদির গনুগদি ভাগাদির গ্রাহ্যহয়না। এবং উভূত রূপ বিশিষ্ট মুব্য পুত্ৰক্ষ যোগ্য ৰাজিবৃদ্ধি পৃথজু সম্প্রা বিভাগ সংযোগ পাংজু অপরত্ব স্থেহ পুরত্ব পরিমাণ ক্রিয়া জাতি ও সমবায় ইহারা সুর্ভত্বা-দির সহিত আলোক ও উভূত রপোর সমূধে চক্রাহ্য হয়, তথাচ চাক্ষ পুতঃক্ষের পুতি আলোক সংযোগ ও উভূত রূপ কারণ হয় ভাছার মধ্যে উভূত রূপের শৌকিক চাক্স্ম পুত্যক্ষের পুতি কেবল আলোক ৰ'যোগ ৰাপুন্ন সমবার সমৃত্যে কারণ এবং দুবেরে সৌকিঞ্চ চাক্ব পুত্রকের পুতি আবোক সংযোগ ও উভূতরণ সমবায় নহকে কারণ হয়। এবং দুবের সমবেত যে পৃথক্ত সংখ্যা ও বিভাগা-দি তাহারবিণের দৌকিক চাক্স্ব পুত্যকেরপুতি আলোক **দং**যোগ ও উভ্ডিরণ বাপুর সমবার বরূপ পর্যারা সমুদ্ধে কারণ হয় ! এবং দুবেঃ সমবেত যে রুণানি তাছাতে সমবেত যে রূপস্থাদি তাছারদি-গের নৌকিক চাক্ষ পুড়কের পুতি বালোক সংযোগ ও উচ্চরল ৰাশুয় সমবেত সমবায় সুৱপ পর্মুরা সমুন্ধে জারণছর ৷ এ ছানে সমবায় শবু উপলক্ষ্প মাত্র ডখাচ দূব্য বৃত্তি সমবায় ও অভাবের শৌকিক চাজুব প্তঃক্ষের পুতি আলোক সংযোগ ও উচ্চ রূপ কুণ্টুত্ব বিশেষণতাবৃত্তপ পর**ন্ন**রা নমুক্তে কারণ হয়**। এই** রীতিজ-মে দুব্য সমবেন্ড রুপাধি বৃদ্ধি সমবার ও অভাবের পুভাকে কার্য্য কারণ ভাব কানিবা। গুলি উল্ল ও শিশাচাদির উচ্ত রশাভাব পুৰ্ক চাত্ৰ পুডাত হয় না !

उद्गतक्षेत्रस्य गोकरः सिश्मित्र सकः। स्याध्यक्तियोग्यं स्यमश्रद्धारयान्यं । स्याध्यक्ते सन्विधिगः सनसा चानकार्यं।

উজ্তল্পর্দ্রেও গোচরঃ সোহপিচ বৃচঃ। কুপাহন্যচচকুবোযোগ্য- কুপমত্রাহপি কারণ-। দুব্যাহ্ধ্যকে বুচোযোগো মনসা জ্ঞানকারণ-।

উদ্ভৱ ল্লখবিশিকী দুৰঃ ওই ভূত ল্লখ দুৰ স্থাদির সহিত স্বচের গ্রাহ্য হয় শিশাদাদির রূপে উভূতত্বাভাব পুযুক্ত এবং পিশাদাদিতে উভূত ক্লৰ্শাভাৰ পুৰুক্ত হাহার দ্বাচ পুত:ছ হরনাঃ এবংরণ ভিন্ন ওঙ্গা-স্ব।দি ভিন্ন চক্ষ্যুহেও যেথ বস্তু ভাছারা দ্বণিশিয়ের ও গাহা হয় অন্তএব পূথকু সংখ্যা ও বিভাগাদি যেং চক্র্ছিঃ রুদ এবং ক্রিয়া ও জাতি ভাষারা ও বলিন্দ্রিয়ের গ্রাহ্য হয়। এবং দুবেরর ত্রনিন্দ্রির ক্ষন্যপুত্যক্ষেওরপ কারণ অর্থাৎপুরেরে বহিরিন্ধিয় জন্য পুত্যক্ষে ক্লপ কারণ হয়। এ খানে নব্য নৈরায়িকের নিগের এই মড়। ৰহিরিশ্রিয় অন্য মুব্য পুড্যকে পুমানাভাব পুযুক্ত রূপ কারন নহে কিন্তুব্যের চাজুব পুত্যক্ষে রণ কারণ এবং স্বাচপুত্যক্ষে উভূত ল্লৰ্শ কারণ যে হেড রুপ ও ল্লেকে বিদ্যমানতা ও অবিদ্য-মানভাতে দুব্যের চাক্ষ্ব ও ভাচ পুত্যক্ষের উৎপত্তি ও অনুধ-পত্তি বেৰিভেছি ৷ অভএব বায়ু আদির রপাভাব পুরুক্ত মাশ্র পুড়া≅ এবং আকাশাদির রশাভাব পুযুক্ত ভাুচ পুত, জ হয় না কিছ ব.জুর দ্বাচ পুত/জ হয় যে হেতু ব:জুকে রূপ ক্ষরিডেছি এই পুতাতি হইডেছে। এবং বছিব্লিপুর জন্য দুব্য পুতঃক্ষের পুতি আঝাতে ও আকাশে অবৃত্তি যে বিশেষ গুণ সেই কারণ হয় অতথ্য কাল ও বিকের বিশেষ গুণালার পুষ্ক এবং আবা ও আকাশের ভাষ্ণ বিশেষ গুণাভাব পুষুক্ত বহিচিপ্রিয় জন্য পুড্যক্ষ হয় না কিন্তু পৃথিব্যাদি অয়ের গন্ধাদি খুরুপ বিশেষ